PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट
UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढ़े इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT मे success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नही है ।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT,Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे है, जो वर्किंग है, जिन्हे उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नही देखना चाहते है, उनके लिए बेहद उपयोगी है । उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets मे उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास प्रश्न और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet मे यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

मार्गदर्शिका बुकलेट

हिंदी साहित्य इकाई-1 का अध्ययन कैसे करें

यह इकाई "हिन्दी भाषा और उसका विकास" पर आधारित है और इसमें हिन्दी भाषा के उद्भव, संरचना और विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है। यूनिट की मुख्य बातें यहाँ दी गई हैं ताकि आपको इसे पढ़ने में आसानी हो:

हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास

- इस खंड में हिन्दी भाषा के जन्म और विकास पर चर्चा की गई है।
- इसमें हिन्दी भाषा की संप्रेषणीयता और सामाजिक सरोकारों को समझने के लिए भाषा की समझ के महत्व पर जोर दिया गया है।
- भाषा का अर्थ और परिभाषा बताई गई है, और यह प्रश्न पूछे गए हैं कि हम भाषा का उपयोग क्यों करते हैं और बिना भाषा के जीवन कैसा होगा।
- 'भाषा' शब्द की व्युत्पत्ति और उसका शाब्दिक अर्थ समझाया गया है।
- सामाजिकता, चिंतन और उपलब्धियों के आधार के रूप में भाषा की भूमिका बताई गई है।
- हिन्दी का ऐतिहासिक विकास 1000 ईस्वी से माना गया है, जिसमें इसके भौगोलिक क्षेत्र और बोलियों के योगदान का उल्लेख है।
- हिन्दी भाषा के इतिहास को भारोपीय भाषा परिवार और आर्यभाषा उप-शाखा के तहत वर्गीकृत किया गया है।
- भारतीय आर्य भाषाओं के विकास को तीन कालों में बांटा गया है: प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक।
- प्रत्येक काल की प्रमुख भाषाई विशेषताओं और साहित्यिक योगदानों का विवरण दिया गया है।
- "हिंदी" शब्द की उत्पत्ति सिंधु शब्द से बताई गई है और इसके अर्थ का विकास समझाया गया है। यह भी बताया गया है कि हिंदी शब्द मूल रूप से फारसी भाषा का है।

हिन्दी भाषा: उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

- यह भाग हिन्दी के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है, जिसमें बताया गया है कि हिन्दी में कई क्षेत्रों की बोलियाँ शामिल हैं।
- भाषा और बोली के संबंध और कैसे ब्रजभाषा और अवधी जैसी कुछ बोलियाँ मध्यकाल में साहित्यिक भाषाएँ बनीं, इसकी चर्चा की गई है।
- हिन्दी की पाँच उपभाषाओं और उनके अंतर्गत आने वाली 18 बोलियों की सूची दी गई है, साथ ही प्रत्येक का संक्षिप्त परिचय भी है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

हिन्दी भाषा का उद्भव एवं विकास: एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य

- **भाषा का अर्थ, परिभाषा और महत्व:** इस उप-खंड में, आपको भाषा की मौलिक प्रकृति को गहराई से समझना होगा। भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक निर्मिति भी है। इसकी विभिन्न परिभाषाओं (जैसे- स्वीट, ब्लॉक तथा ट्रेगर, चॉम्स्की के विचार) का अध्ययन करें और उनकी तुलनात्मक समीक्षा करें।

- भाषा के सामाजिक महत्व पर विचार करें कि कैसे यह समाज को संगठित करती है, संस्कृति का वहन करती है, ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाती है, और मानवीय अस्मिता का निर्माण करती है। 'भाषा' शब्द की संस्कृत की 'भाष्' धातु से व्युत्पत्ति और उसके विभिन्न अर्थ छटाओं (बोलना, व्यक्त करना, प्रकाशित करना) को उदाहरण सहित समझें। यह भी विचार करें कि भाषा के अभाव में मानव सभ्यता का विकास किस प्रकार अवरुद्ध हो सकता था और भाषा ने किस प्रकार मानव को अन्य प्राणियों से विशिष्ट बनाया है।

- **हिन्दी का ऐतिहासिक विकास-यात्रा:** हिन्दी भाषा के विकास की यात्रा लगभग एक सहस्राब्दी पुरानी है, जिसका आरंभ मोटे तौर पर 1000 ईस्वी के आसपास माना जाता है। इसके विकास-क्रम को समझने के लिए आपको इसे वृहत्तर संदर्भ में देखना होगा:

  - **भारोपीय भाषा परिवार:** विश्व के सबसे बड़े भाषा परिवारों में से एक, भारोपीय भाषा परिवार में हिन्दी का स्थान और इसकी प्रमुख शाखाएँ (जैसे शतम और केंटुम वर्ग, और उनमें हिन्दी का शतम वर्ग में आना) का अध्ययन करें। भारोपीय परिवार की अन्य प्रमुख भाषाओं से हिन्दी की तुलनात्मक स्थिति पर भी संक्षिप्त दृष्टि डालें।

  - **भारतीय आर्य भाषाएँ:** भारोपीय परिवार के अंतर्गत आर्य भाषा उपशाखा (विशेष रूप से हिंद-ईरानी शाखा की भारतीय आर्य उपशाखा) में हिन्दी की स्थिति को जानें। भारतीय आर्य भाषाओं के तीन प्रमुख कालों – प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (जिसमें वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत शामिल हैं), मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (जिसमें पालि, विभिन्न प्राकृतें, और अपभ्रंश समाहित हैं), और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (जिसमें हिन्दी और अन्य समकालीन भारतीय भाषाएँ जैसे बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि आती हैं) – की प्रमुख भाषिक विशेषताओं (ध्वनिगत, व्याकरणिक, शाब्दिक), उनके निर्धारित कालखंड, और उनमें रचित महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रंथों (जैसे वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, त्रिपिटक, जैन आगम ग्रंथ, अपभ्रंश के काव्य) का तुलनात्मक अध्ययन करें।

  - **अपभ्रंश से हिन्दी तक:** विशेष रूप से शौरसेनी अपभ्रंश से हिन्दी (विशेषकर पश्चिमी हिन्दी और उसकी बोलियाँ जैसे खड़ी बोली, ब्रजभाषा) का विकास कैसे हुआ, इस संक्रमणकालीन प्रक्रिया को विस्तार से समझें। अपभ्रंश की अन्य शाखाओं (जैसे मागधी, अर्धमागधी) से विकसित आधुनिक भारतीय भाषाओं का भी संक्षिप्त परिचय प्राप्त करें। अवहट्ट को अपभ्रंश का परवर्ती रूप या पुरानी हिन्दी की पूर्वपीठिका के रूप में जानें और इसके साहित्यिक उदाहरणों (जैसे विद्यापति की 'कीर्तिलता') पर ध्यान दें।

  - **"हिंदी" शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ-विकास:** "सिंधु" (नदी, और उससे सिंचित प्रदेश) शब्द से ईरानी उच्चारण भेद के कारण "हिंदू" (स का ह होना), फिर भौगोलिक इकाई के रूप में "हिंद" और अंततः विशेषण रूप में "हिंदी" (अर्थात् हिंद की/से संबंधित) शब्द कैसे बना, इस रोचक व्युत्पत्तिमूलक यात्रा को समझें।

    - यह भी ध्यान रखें कि "हिंदी" शब्द मूलतः फारसी भाषा का है और इसका प्रयोग विभिन्न कालों में विभिन्न अर्थों (कभी भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों के लिए, कभी हिंद में बोली जाने वाली विभिन्न

भाषाओं के समूह के लिए, और बाद में एक विशिष्ट साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली के लिए) में होता रहा है।

हिन्दी भाषा: उपभाषाएँ एवं बोलियाँ – विविधता में एकता

- **भाषा और बोली का अंतर्संबंध एवं परिभाषा:** भाषा और बोली के बीच के सूक्ष्म और महत्वपूर्ण अंतर को उनकी प्रकृति, क्षेत्र, प्रयोग और साहित्यिक स्थिति के आधार पर स्पष्ट रूप से समझें। एक बोली कैसे सामाजिक, राजनीतिक या साहित्यिक कारणों से विकसित होकर उपभाषा और फिर मानक भाषा का दर्जा प्राप्त कर सकती है
    - जैसे ब्रजभाषा और अवधी का मध्यकाल में समृद्ध साहित्यिक भाषाएँ बनना, और आधुनिक काल में खड़ी बोली का मानक हिन्दी के रूप में प्रतिष्ठित होना), इस प्रक्रिया को जानें। यह भी समझें कि कब एक बोली को स्वतंत्र भाषा का दर्जा दिया जा सकता है और इसके क्या भाषावैज्ञानिक एवं सामाजिक-राजनीतिक आधार होते हैं।
- **हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ (वर्गीकरण एवं क्षेत्र):** हिन्दी केवल एक अखंड भाषिक इकाई नहीं है, बल्कि यह एक "भाषा-समूह" है जिसके अंतर्गत कई क्षेत्रीय उपभाषाएँ और उनकी विभिन्न बोलियाँ आती हैं। जॉर्ज ग्रियर्सन जैसे भाषाविदों द्वारा किए गए वर्गीकरण का अध्ययन करें और उनके आधारों को समझें। हिन्दी की पाँच प्रमुख उपभाषाओं – पश्चिमी हिन्दी (शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित), पूर्वी हिन्दी (अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित), राजस्थानी (शौरसेनी अपभ्रंश से प्रभावित), बिहारी (मागधी अपभ्रंश से विकसित), और पहाड़ी (खस अपभ्रंश से प्रभावित) – को पहचानें। प्रत्येक उपभाषा के अंतर्गत आने वाली लगभग 18 प्रमुख बोलियों
    - जैसे पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुंदेली, कन्नौजी; पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी; राजस्थानी के अंतर्गत मारवाड़ी, मेवाती, जयपुरी, मालवी; बिहारी के अंतर्गत भोजपुरी, मगही, मैथिली; और पहाड़ी के अंतर्गत कुमाऊँनी, गढ़वाली) के नाम, उनके मुख्य भौगोलिक क्षेत्र (मानचित्र की सहायता से समझना उत्तम होगा), और उनकी एक-दो प्रमुख भाषिक विशेषताओं (यदि इकाई में दी गई हों, जैसे 'ओ' कारान्त प्रवृत्ति या 'ने' परसर्ग का अभाव) को कंठस्थ करें। यह जानना महत्वपूर्ण है कि यही विविधता हिन्दी की शक्ति और व्यापकता का आधार है। इन बोलियों के साहित्यिक योगदान (जैसे तुलसीदास का अवधी में 'रामचरितमानस', सूरदास का ब्रजभाषा में 'सूरसागर') का भी संक्षिप्त परिचय प्राप्त करें।

हिंदी साहित्य इकाई 2 SAMPLE

आदिकाल (संवत् 1050 - 1375)

- **परिभाषा और काल-सीमा:** हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रथम चरण 'आदिकाल' कहलाता है, जिसका समय संवत् 1050 से 1375 (लगभग 993 ई. से 1318 ई.) तक माना जाता है।
- **नामकरण:** इस काल को 'आदिकाल' नाम आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने दिया था, जो विद्वानों के बीच सबसे अधिक मान्य है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** यह युग राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के इतिहास में भारी उथल-पुथल, संक्रमण और परिवर्तनों का काल था।
- **संक्रमण की प्रकृति:** इस दौर में एक ओर पुरानी व्यवस्थाएँ और मान्यताएँ समाप्त हो रही थीं, तो दूसरी ओर नए विचारों और साहित्यिक प्रवृत्तियों का जन्म हो रहा था।
- **साहित्यिक महत्व:** साहित्यिक दृष्टि से यह काल अपभ्रंश की विरासत को अपनाते हुए नई देशभाषा (हिन्दी) के उदय का साक्षी बना।

(क) आदिकाल का नामकरण: एक विवादास्पद प्रश्न

आदिकाल के स्वरूप को लेकर विद्वानों में मतभेद होने के कारण इसके नामकरण पर भी पर्याप्त विवाद रहा है। विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए प्रमुख नाम इस प्रकार हैं:

- **वीरगाथा काल: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इस काल में वीरगाथात्मक 'रासो' ग्रंथों की प्रचुरता के आधार पर यह नाम दिया।

- हालाँकि, बाद की खोजों से अन्य प्रकार की रचनाएँ (धार्मिक, शृंगारिक) भी प्रचुर मात्रा में मिलीं, जिससे यह नाम पूरी तरह उपयुक्त नहीं माना गया।

- **चारण काल: डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन** और **डॉ. रामकुमार वर्मा** ने चारण-भाट कवियों की भूमिका के आधार पर इसे 'चारण काल' कहा।

- **सिद्ध-सामंत काल: राहुल सांकृत्यायन** ने तत्कालीन समाज के दो प्रमुख स्तंभों - सिद्ध योगी और सामंती शासकों - के आधार पर यह नाम प्रस्तावित किया।

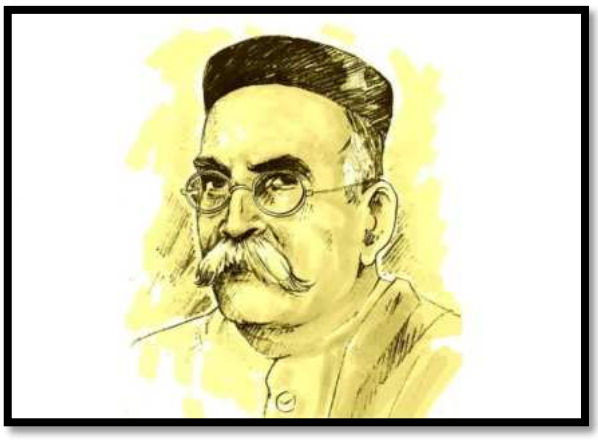

- **बीजवपन काल: आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** ने इसे हिन्दी साहित्य के आरंभिक बीज बोए जाने का काल माना।

- **आदिकाल: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा दिया गया यह नाम सबसे व्यापक और स्वीकृत है क्योंकि यह उस अनिश्चित, प्रारंभिक और विभिन्न धाराओं से युक्त साहित्यिक युग को किसी एक प्रवृत्ति में बाँधने के बजाय उसके आदि स्वरूप को इंगित करता है।

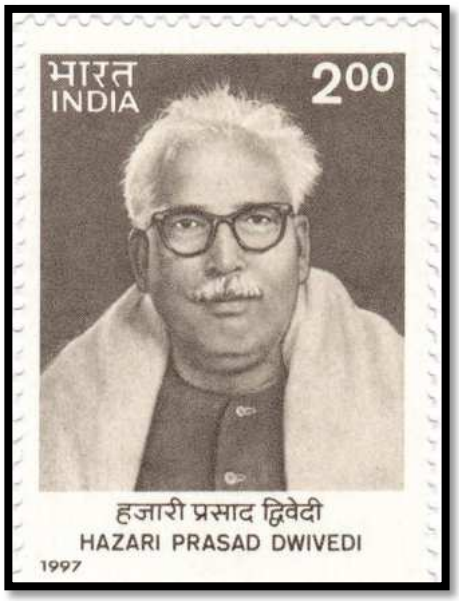

आदिकाल का नामकरण

विद्वान (Scholar)	दिया गया नाम	आधार/कारण (Basis/Reason)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	वीरगाथा काल	'रासो' ग्रंथों की प्रचुरता के आधार पर।
डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन और डॉ. रामकुमार वर्मा	चारण काल	चारण-भाट कवियों की महत्वपूर्ण भूमिका के आधार पर।
राहुल सांकृत्यायन	सिद्ध-सामंत काल	तत्कालीन समाज के दो प्रमुख स्तंभों - सिद्ध योगी और सामंती शासकों - के आधार पर।
आचार्य महावीर	बीजवपन	यह हिन्दी साहित्य के आरंभिक बीज बोए

प्रसाद द्विवेदी	काल	जाने का काल था।
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	आदिकाल	यह नाम सबसे व्यापक और स्वीकृत है क्योंकि यह उस अनिश्चित, प्रारंभिक और विभिन्न धाराओं वाले साहित्यिक युग को किसी एक प्रवृत्ति में नहीं बांधता।

(ख) आदिकालीन परिवेश: संघर्ष और संक्रमण का युग

आदिकालीन साहित्य को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों को जानना अत्यंत आवश्यक है, जिन्होंने साहित्य की चेतना को गहराई से प्रभावित किया।

1. राजनीतिक परिवेश:

1. सम्राट हर्षवर्धन (मृत्यु 647 ई.) के बाद उत्तर भारत में एक शक्तिशाली केंद्रीय सत्ता का पूर्णतः अभाव हो गया था।
2. देश कई छोटे-छोटे गणराज्यों और सामंती ठिकानों में बँट गया था।
3. कन्नौज, अजमेर, दिल्ली, बुन्देलखण्ड के चंदेल और गुजरात के सोलंकी शासक अपने वर्चस्व के लिए लगातार एक-दूसरे से संघर्ष करते रहते थे।
4. ये राजपूत शासक आपसी कलह, ईर्ष्या और अपने शौर्य का प्रदर्शन करने के लिए अक्सर आपस में ही युद्ध किया करते थे।
5. उस समय राष्ट्र की भावना केवल अपने छोटे से राज्य तक ही सीमित थी, जिसे 'संकुचित राष्ट्रीयता' कहा जा सकता है।

6. इसी राजनीतिक बिखराव के समय में, पश्चिमोत्तर सीमा से महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी जैसे विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत पर हमले किए, जिससे अशांति और भी बढ़ गई।
7. लगातार युद्ध और असुरक्षा का यही माहौल 'वीरगाथात्मक' काव्य की मुख्य प्रेरणा का स्रोत बना।

2. सामाजिक परिवेश:

1. उस समय का समाज पूरी तरह से सामंती व्यवस्था पर आधारित था।
2. जाति-व्यवस्था के नियम और बंधन बहुत कठोर हो चुके थे।
3. शासक वर्ग (राजपूत) एक ही साथ वीरता और विलासिता का दोहरा जीवन जीते थे।
4. समाज में महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी; उन्हें केवल भोग-विलास और वंश चलाने का साधन माना जाता था।
5. नारी के अपहरण या उसके सम्मान की रक्षा के लिए बड़े-बड़े युद्ध होना एक आम बात थी।
6. स्वयंवर की प्रथा तो प्रचलित थी, लेकिन वह भी अक्सर युद्ध की वजह बन जाती थी।
7. समाज में जौहर और सती प्रथा जैसी बुरी रीतियाँ फैली हुई थीं।
8. आम जनता का जीवन युद्ध, धर्म और शासन के तिहरे बोझ के नीचे पिस रहा था, जिससे लोगों में निराशा और पलायन की भावना पैदा हो रही थी।

3. धार्मिक परिवेश:

1. धार्मिक दृष्टि से यह युग भारी उथल-पुथल और विभिन्न मतों के आपसी मेल-जोल का था।

2. इस काल में भारतीय धर्म-साधना के भीतर अनेक नए सम्प्रदायों का उदय हुआ।
3. वैदिक और पौराणिक हिन्दू धर्म का प्रभाव तो था, लेकिन बौद्ध धर्म अपनी वज्रयान शाखा के रूप में विकृत हो गया था।
4. इस विकृत रूप में तंत्र-मंत्र, पंचमकार (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन) और गुप्त साधनाओं का बोलबाला था।
5. सिद्धों की इसी भोग-प्रधान साधना के विरोध में 'नाथ-पंथ' का उदय हुआ, जिसे गोरखनाथ ने शुरू किया था।
6. नाथ-पंथ के अनुयायियों ने हठयोग, इन्द्रियों पर नियंत्रण और नैतिक आचरण पर विशेष बल दिया।
7. जैन मुनि भी अपभ्रंश भाषा के द्वारा अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे थे।
8. इस तरह, उस समय के समाज में कई तरह के अंधविश्वास, रूढ़ियाँ और अलग-अलग धार्मिक विचार प्रचलित थे।

4. साहित्यिक परिवेश:

इस काल में साहित्य-रचना की तीन प्रमुख धाराएँ समानांतर रूप से प्रवाहित हो रही थीं:

- **संस्कृत साहित्य:** जो राजदरबारों और मठों में अपनी परंपरागत शास्त्रीय शैली में लिखा जा रहा था।
- **प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य:** जिसमें जैन, सिद्ध और नाथ कवि अपने-अपने मतों का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। यह साहित्य सीधे जन-सामान्य से जुड़ा था।
- **देशभाषा (हिन्दी) साहित्य:** जिसमें चारण-भाट कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की कीर्ति का बखान करने के लिए वीरगाथात्मक काव्य (रासो)

रच रहे थे, वहीं अमीर खुसरो और विद्यापति जैसे लोक-कवि शृंगार, मनोरंजन और भक्ति की रचनाएँ कर रहे थे।

आदिकालीन परिवेश (संक्षिप्त सार)

परिवेश (Environment)	मुख्य विशेषताएँ (Key Features)
राजनीतिक	केंद्रीय सत्ता का अभाव, निरंतर युद्ध और असुरक्षा का माहौल।
सामाजिक	सामंती व्यवस्था, नारी की दयनीय स्थिति और सामाजिक कुरीतियाँ।
धार्मिक	अनेक मतों का उदय (सिद्ध, नाथ, जैन), धार्मिक उथल-पुथल।
साहित्यिक	वीरगाथा, धर्म और शृंगार पर आधारित विविध साहित्य रचना।

यहाँ UGC NET परीक्षा के लिए 15 महत्वपूर्ण तथ्य दिए गए हैं:

1. **काल-निर्धारण:** आदिकाल का सर्वमान्य समय संवत् 1050 से 1375 (लगभग 993 ई. से 1318 ई.) तक माना जाता है।

2. **'आदिकाल' नामकरण:** यह सर्वाधिक मान्य नाम **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** द्वारा दिया गया है।
3. **'वीरगाथा काल' नामकरण: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने रासो ग्रंथों की प्रचुरता के कारण इसे 'वीरगाथा काल' कहा।
4. **'चारण काल' नामकरण: डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन** और **डॉ. रामकुमार वर्मा** ने इस काल को 'चारण काल' की संज्ञा दी।
5. **'सिद्ध-सामंत काल' नामकरण:** यह नाम **राहुल सांकृत्यायन** द्वारा दिया गया था।
6. **राजनीतिक पृष्ठभूमि:** सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद केंद्रीय सत्ता का अभाव और छोटे-छोटे सामंती राज्यों का उदय इस काल की प्रमुख राजनीतिक विशेषता थी।
7. **संकुचित राष्ट्रीयता:** इस काल के कवियों में राष्ट्र की भावना अपने आश्रयदाता राजा और उसके छोटे से राज्य तक ही सीमित थी।
8. **धार्मिक पृष्ठभूमि (सिद्ध):** बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा विकृत होकर सिद्धों के रूप में प्रचलित हुई, जिसमें तंत्र-मंत्र और गुह्य साधनाओं की प्रधानता थी।
9. **धार्मिक पृष्ठभूमि (नाथ):** सिद्धों की वामाचारी भोग-प्रधान साधना की प्रतिक्रिया के रूप में **नाथ-पंथ** का उदय हुआ, जिसके प्रणेता गोरखनाथ थे।
10. **तीन साहित्यिक धाराएँ:** इस काल में संस्कृत, प्राकृत-अपभ्रंश, और देशभाषा (हिन्दी) साहित्य की तीन धाराएँ समानांतर रूप से चल रही थीं।
11. **वीरगाथात्मक काव्य:** इस काल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति 'वीरगाथात्मक' काव्य रचना थी, जिसे 'रासो साहित्य' भी कहते हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

12. **नारी की स्थिति:** समाज में नारी को केवल भोग की वस्तु समझा जाता था और जौहर तथा सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थीं।
13. **विदेशी आक्रमण:** यह युग महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी जैसे विदेशी आक्रांताओं के हमलों का साक्षी रहा, जिसने अशांति के माहौल को बढ़ाया।
14. **साहित्य के प्रेरणास्रोत:** निरंतर युद्ध और असुरक्षा का वातावरण ही 'वीरगाथात्मक' काव्य की मुख्य प्रेरणा बना।
15. **'बीजवपन काल' नामकरण: आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** ने इसे हिन्दी साहित्य का 'बीजवपन काल' कहा।

(ग) आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ)

उपरोक्त परिस्थितियों के कारण आदिकालीन साहित्य में कुछ सामान्य विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं:

1. **आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा:** अधिकांश कवि राज्याश्रित थे, अतः उनकी कविताओं का केंद्र उनके आश्रयदाता राजाओं का शौर्य, वैभव, पराक्रम और उदारता थी। इस प्रशंसा में **अतिशयोक्ति** का भरपूर प्रयोग किया गया है।
2. **ऐतिहासिकता और कल्पना का मिश्रण:** रासो काव्यों में ऐतिहासिक पात्रों (जैसे पृथ्वीराज चौहान, बीसलदेव, परमाल) का उल्लेख तो है, किन्तु घटनाओं, तिथियों और वंश-वृक्षों का वर्णन इतिहास से मेल नहीं खाता। कवियों ने अपनी कल्पना का प्रयोग कर ऐतिहासिक घटनाओं को रोचक

और नाटकीय बना दिया है, जिससे इनमें **ऐतिहासिकता का अभाव** और कल्पना की प्रधानता है।

3. **युद्धों का यथार्थ एवं सजीव वर्णन:** इस युग के कवि केवल कलम के ही नहीं, अपितु तलवार के भी धनी थे। वे युद्धों में स्वयं भाग लेते थे, जिस कारण उनके द्वारा किए गए युद्ध-वर्णन अत्यंत सजीव, रोमांचक और यथार्थ बन पड़े हैं।
4. **वीर एवं शृंगार रस का अद्भुत समन्वय:** यह इस काल की सबसे अनूठी विशेषता है। कविताओं में वीर रस प्रधान है, किन्तु शृंगार का भी उत्कृष्ट वर्णन मिलता है। युद्ध का कारण अक्सर कोई सुंदरी राजकुमारी होती थी, अतः नायिका के नख-शिख सौंदर्य वर्णन और उसके प्रेम-प्रसंगों का विस्तृत चित्रण किया गया है, जिसके बाद उसी नायिका को प्राप्त करने के लिए भीषण युद्ध का वर्णन होता है।
5. **संकुचित राष्ट्रीयता:** कवियों का राष्ट्रप्रेम अपने आश्रयदाता राजा और उसके छोटे से राज्य तक ही सीमित था। उन्हें अखण्ड भारत की कोई कल्पना नहीं थी। एक राजा का दूसरे पड़ोसी भारतीय राजा के विरुद्ध विदेशी आक्रांता से मिलकर युद्ध करना भी इसी भावना का परिचायक है।
6. **प्रामाणिकता में संदेह:** आदिकालीन साहित्य, विशेषकर रासो ग्रंथ, अधिकांशतः मौखिक परंपरा में जीवित रहे। बाद में उन्हें लिपिबद्ध किया गया, जिससे उनमें बहुत से **प्रक्षिप्त अंश (बाद में जोड़े गए हिस्से)** जुड़ गए। इस कारण इनके मूल स्वरूप को लेकर विद्वानों में गहरा मतभेद है और इनकी प्रामाणिकता संदिग्ध मानी जाती है।
7. **विविध छंदों का प्रयोग:** इस काल के कवियों ने काव्य-सौंदर्य के लिए अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। दोहा, रोला, छप्पय, तोमर,

गाहा, आर्या आदि प्रमुख छंद हैं। चंदबरदाई कृत **'पृथ्वीराज रासो'** को छंदों की विविधता के कारण **'छंदों का अजायबघर'** कहा जाता है।

8. **भाषा के विविध रूप (डिंगल-पिंगल):** इस काल में साहित्यिक भाषा के दो प्रमुख रूप प्रचलित हुए:
   - **डिंगल:** अपभ्रंश और राजस्थानी के योग से बनी यह शैली कर्कश और ओजपूर्ण थी, जो युद्ध-वर्णन के लिए उपयुक्त थी।
   - **पिंगल:** अपभ्रंश और ब्रजभाषा के योग से बनी यह शैली मधुर और कर्णप्रिय थी, जिसका प्रयोग शृंगार और भक्ति के पदों में होता था।

(घ) आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण

अध्ययन की सुविधा के लिए आदिकालीन साहित्य को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जाता है:

1. रासो साहित्य:

चारण कवियों द्वारा रचित यह वीरगाथात्मक साहित्य आदिकाल की प्रमुख पहचान है।

- **प्रमुख ग्रंथ:**
  - **पृथ्वीराज रासो:** चंदबरदाई (हिन्दी का प्रथम महाकाव्य)
  - **बीसलदेव रासो:** नरपति नाल्ह (एक विरह-प्रधान शृंगारिक काव्य)
  - **परमाल रासो:** जगनिक (मूल रूप में अनुपलब्ध, 'आल्हा खंड' के रूप में प्रसिद्ध)
  - **खुमान रासो:** दलपति विजय
  - **हम्मीर रासो:** शार्गधर

2. सिद्ध साहित्य:

बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के 84 सिद्धों द्वारा जनभाषा में लिखा गया साहित्य।

- **प्रमुख कवि:** सरहपा (प्रथम सिद्ध), शबरपा, लुइपा, डोम्भिपा, कण्हपा।
- **विशेषताएँ:** तंत्र-मंत्र और गुह्य साधना पर बल, गुरु की महिमा का गान, बाह्याडंबरों और वर्ण-व्यवस्था का खंडन, रहस्यमयी प्रतीकात्मक भाषा जिसे **'संध्या भाषा'** कहा गया।

3. नाथ साहित्य:

सिद्धों की भोग-प्रधान प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया में हठयोगियों द्वारा रचित साहित्य। इनकी संख्या 9 मानी गई है।

- **प्रवर्तक:** मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य **गोरखनाथ**।
- **विशेषताएँ:** हठयोग द्वारा इन्द्रिय-निग्रह, मन की साधना, गुरु की महिमा, सदाचार और वैराग्य पर बल। इनकी भाषा सधुक्कड़ी (खड़ी बोली मिश्रित राजस्थानी) थी। नाथ-पंथ ने भक्तिकाल के संत काव्य (विशेषकर कबीर) को गहरा प्रभावित किया।

4. जैन साहित्य:

जैन मुनियों द्वारा अपने धर्म के प्रचार हेतु रचित साहित्य। यह आदिकाल का सर्वाधिक प्रामाणिक साहित्य माना जाता है।

- **प्रमुख रचनाएँ:**

- **श्रावकाचार:** देवसेन (हिन्दी की पहली रचना मानी जाती है)
- **भरतेश्वर बाहुबली रास:** शालिभद्र सूरि
- **चंदनबाला रास:** आसगु
- **पउम चरिउ:** स्वयंभू ('अपभ्रंश का वाल्मीकि' कहा जाता है)

5. लौकिक (प्रकीर्णक) साहित्य:

उपर्युक्त धाराओं से इतर, स्वतंत्र रूप से रचा गया साहित्य जो लोक-जीवन पर आधारित था।

- **प्रमुख रचनाएँ:**
  - **ढोला-मारू रा दूहा:** कल्लोल कवि द्वारा रचित एक प्रसिद्ध लोक-प्रेमगाथा।
  - **अमीर खुसरो की रचनाएँ:** पहेलियाँ, मुकरियाँ, गजलें, दो सुखने। खुसरो को **खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम प्रयोक्ता** माना जाता है।
  - **विद्यापति की पदावली:** मैथिली भाषा में रचित राधा-कृष्ण के प्रेम और भक्ति के सरस पद।

- **गद्य रचनाएँ:**
  - **राउलवेल:** रोडा कवि (शिला पर अंकित, हिन्दी का पहला चम्पू काव्य - गद्य-पद्य मिश्रित)।
  - **उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण:** दामोदर शर्मा (एक व्याकरण ग्रंथ)।
  - **वर्ण रत्नाकर:** ज्योतिरीश्वर ठाकुर (मैथिली गद्य का विश्वकोश)।

UGC NET परीक्षा के लिए 15-20 महत्वपूर्ण तथ्य यहाँ दिए गए हैं:

1. **प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति:** आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति **वीर एवं शृंगार रस का समन्वय** है।
2. **'छंदों का अजायबघर':** चंदबरदाई कृत **'पृथ्वीराज रासो'** को उसकी छंद विविधता के कारण 'छंदों का अजायबघर' कहा जाता है।
3. **डिंगल भाषा:** यह **अपभ्रंश और राजस्थानी** के योग से बनी कर्कश एवं ओजपूर्ण शैली थी, जिसका प्रयोग युद्ध-वर्णन में होता था।
4. **पिंगल भाषा:** यह **अपभ्रंश और ब्रजभाषा** के योग से बनी मधुर शैली थी, जिसका प्रयोग शृंगारिक रचनाओं में होता था।
5. **रासो ग्रंथों की प्रामाणिकता:** आदिकाल के अधिकांश रासो ग्रंथों की प्रामाणिकता **संदिग्ध** है, क्योंकि उनमें समय के साथ बहुत से **'प्रक्षिप्त अंश' (बाद में जोड़े गए हिस्से)** जुड़ गए।
6. **'आल्हा खंड':** जगनिक द्वारा रचित **'परमाल रासो'** को ही 'आल्हा खंड' के नाम से जाना जाता है, जो लोक में अत्यंत प्रसिद्ध है।
7. **'बीसलदेव रासो':** नरपति नाल्ह द्वारा रचित यह ग्रंथ वीरगाथात्मक न होकर मुख्यतः एक **विरह-प्रधान शृंगारिक काव्य** है।
8. **सिद्धों की संख्या:** सिद्धों की संख्या **84** मानी गई है, और **सरहपा** को प्रथम सिद्ध माना जाता है।
9. **'संध्या भाषा':** सिद्धों द्वारा अपनी रचनाओं में प्रयोग की गई रहस्यमयी और प्रतीकात्मक भाषा को **'संध्या भाषा'** कहा गया है।
10. **नाथों की संख्या:** नाथों की संख्या **9** मानी गई है और **गोरखनाथ** को नाथ-पंथ का प्रवर्तक माना जाता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

11. **नाथ-पंथ का प्रभाव:** नाथ-पंथ ने **भक्तिकाल के संत काव्य** (विशेषकर कबीर) को हठयोग, गुरु की महिमा और इंद्रिय-निग्रह जैसी बातों से गहरा प्रभावित किया।
12. **सर्वाधिक प्रामाणिक साहित्य:** आदिकाल का **जैन साहित्य** सर्वाधिक प्रामाणिक और सुरक्षित माना जाता है।
13. **हिन्दी की प्रथम रचना:** देवसेन कृत **'श्रावकाचार'** को हिन्दी की पहली रचना माना जाता है।
14. **'अपभ्रंश का वाल्मीकि': स्वयंभू** को उनके ग्रंथ **'पउम चरिउ'** (रामकथा पर आधारित) के कारण 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' कहा जाता है।
15. **खड़ी बोली के प्रथम प्रयोक्ता: अमीर खुसरो** को खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम प्रयोक्ता माना जाता है।
16. **विद्यापति की 'पदावली':** विद्यापति की प्रसिद्धि का मुख्य आधार उनकी **'पदावली'** है, जिसकी रचना **मैथिली भाषा** में की गई है।
17. **हिन्दी का प्रथम चम्पू काव्य:** रोडा कवि द्वारा रचित **'राउलवेल'** एक शिला पर अंकित कृति है और इसे हिन्दी का पहला **चम्पू काव्य (गद्य-पद्य मिश्रित रचना)** माना जाता है।
18. **व्याकरण ग्रंथ:** दामोदर शर्मा द्वारा रचित **'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण'** आदिकाल का एक महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रंथ है।
19. **मैथिली गद्य:** ज्योतिरीश्वर ठाकुर का **'वर्ण रत्नाकर'** मैथिली गद्य का विश्वकोश माना जाता है।
20. **लोक-प्रेमगाथा:** कल्लोल कवि द्वारा रचित **'ढोला-मारू रा दूहा'** एक प्रसिद्ध राजस्थानी लोक-प्रेमगाथा है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

(ङ) आदिकालीन प्रमुख कवि और उनका योगदान

1. चंदबरदाई (12वीं सदी):

इन्हें आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दी का प्रथम महाकवि' और इनके ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' को 'हिन्दी का प्रथम महाकाव्य' माना है।

ये दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान के सखा और राजकवि थे। रासो की प्रामाणिकता अत्यंत विवादास्पद है, फिर भी भाषा, छंद-विधान और महाकाव्यात्मक संरचना की दृष्टि से यह एक अनुपम ग्रंथ है।

2. अमीर खुसरो (1253-1325 ई.):

- **मूल नाम:** अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो।
- **उपनाम:** **'तूती-ए-हिन्द' (हिन्दुस्तान की तूती)**।
- **महत्व:** खुसरो एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे कवि, संगीतकार, इतिहासकार और कोषकार थे। उन्हें **खड़ी**

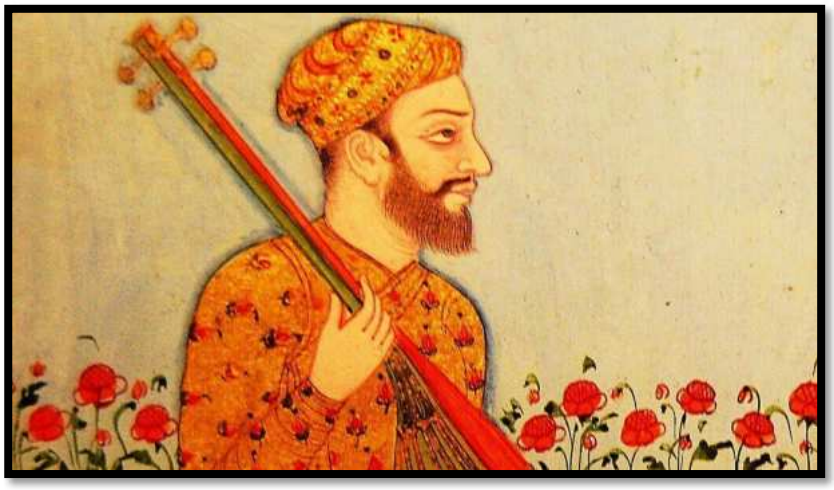

बोली हिन्दी के आदि कवि के रूप में जाना जाता है। उन्होंने सितार और तबला जैसे वाद्यों तथा कव्वाली और तराना जैसी गायन-शैलियों का आविष्कार किया।

- **रचनाएँ: खालिकबारी** (फारसी-हिन्दी का पर्यायवाची कोष), **पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, गजलें**। उनकी भाषा सरल, सरस और जन-सामान्य के निकट है।

3. विद्यापति (लगभग 1350-1450 ई.):

- **उपाधि: 'मैथिल कोकिल', 'अभिनव जयदेव'**।
- **महत्व:** विद्यापति आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकाल के कवि हैं। उनकी कीर्ति का मुख्य आधार उनकी **'पदावली'** है, जो **मैथिली** भाषा में रचित है। इसमें राधा-कृष्ण की प्रेम-लीलाओं का इतना मनोहारी और कलात्मक चित्रण है कि लोग इसे गाते-गाते भक्ति में लीन हो जाते हैं।
- **विवाद:** विद्यापति भक्त कवि हैं या शृंगारी, यह हिन्दी साहित्य का एक प्रसिद्ध विवाद है। वस्तुतः वे मूलतः शृंगारी कवि हैं, पर उनके पदों में भक्ति का भी अद्भुत समन्वय मिलता है।
- **अन्य रचनाएँ: कीर्तिलता** और **कीर्तिपताका** (अवहट्ट भाषा में), **भूपरिक्रमा**, **पुरुष-परीक्षा** (संस्कृत में)।

सारणी 3.1: आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराएँ एवं विशेषताएँ

साहित्यिक धारा	प्रमुख विशेषता	प्रतिनिधि कवि/रचना	भाषा/शैली	योगदान
रासो साहित्य	वीर एवं शृंगार रस, आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा, ऐतिहासिकता का अभाव, युद्धों का सजीव वर्णन	चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो), जगनिक (परमाल रासो), नरपति नाल्ह (बीसलदेव रासो)	डिंगल, पिंगल	हिन्दी की प्रथम महाकाव्यात्मक परंपरा का सूत्रपात
सिद्ध साहित्य	रहस्यवाद, तंत्र-साधना, पाखंड व वर्ण-व्यवस्था का विरोध, गुरु की महिमा, अंतर्मुखी साधना	सरहपा (दोहाकोश), कण्हपा, शबरपा	संध्या भाषा (अपभ्रंश)	निर्गुण भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि तैयार की
नाथ साहित्य	हठयोग, इंद्रिय-निग्रह, वैराग्य, सदाचार, शून्य-साधना, गुरु का महत्व	गोरखनाथ (गोरखबानी, सबदी, पद)	सधुक्कड़ी	संत काव्य धारा (कबीर) को सीधे प्रभावित किया
जैन साहित्य	धर्मोपदेश, आचार-विचार, शांत रस, पौराणिक कथाओं	देवसेन (श्रावकाचार), शालिभद्र सूरि	अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी	सर्वाधिक प्रामाणिक एवं सुरक्षित साहित्य

	का जैन संस्करण, चरित्र काव्य	(भरतेश्वर बाहुबली रास), स्वयंभू (पउम चरिउ)		
लौकिक साहित्य	शृंगार, मनोरंजन, प्रेम-कथा, लोक-जीवन का चित्रण, मानवतावाद	अमीर खुसरो (पहेलियाँ), विद्यापति (पदावली), कल्लोल कवि (ढोला-मारू रा दूहा)	खड़ी बोली, मैथिली, राजस्थानी	हिन्दी को जन-जीवन और संगीत से जोड़ा

परीक्षा तथ्य: आदिकाल

1. आदिकाल का सर्वमान्य नामकरण **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने किया।
2. आचार्य शुक्ल ने आदिकाल को **'वीरगाथा काल'** कहा है।
3. हिन्दी का प्रथम महाकवि **चंदबरदाई** को और प्रथम महाकाव्य **'पृथ्वीराज रासो'** को माना जाता है।
4. 'पृथ्वीराज रासो' को **'छंदों का अजायबघर'** भी कहा जाता है।
5. सिद्धों की संख्या **84** मानी गई है और प्रथम सिद्ध **सरहपा** हैं।
6. सिद्धों की भाषा को **'संध्या भाषा'** कहा गया है।
7. नाथों की संख्या **9** मानी गई है और नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक **गोरखनाथ** हैं।
8. **'हठयोग'** का उपदेश **नाथों** ने दिया था।

9. **देवसेन** कृत **'श्रावकाचार'** को हिन्दी की प्रथम रचना माना जाता है।
10. **अमीर खुसरो** को **'खड़ी बोली हिन्दी का आदि कवि'** माना जाता है।
11. **'तूती-ए-हिन्द'** (हिन्दुस्तान की तूती) **अमीर खुसरो** को कहा जाता है।
12. **विद्यापति** को **'मैथिल कोकिल'** और **'अभिनव जयदेव'** की उपाधि दी गई है।
13. विद्यापति की प्रसिद्धि का आधार उनकी **'पदावली'** है, जो **मैथिली** भाषा में है।
14. विद्यापति ने 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' की रचना **अवहट्ट** भाषा में की है।
15. **'आल्हा खंड'** के रचयिता **जगनिक** हैं, यह **परमाल रासो** का एक भाग है।
16. **'बीसलदेव रासो'** (नरपति नाल्ह) एक **शृंगार-परक (विरह) काव्य** है, वीरगाथात्मक नहीं।
17. **'ढोला-मारू रा दूहा'** एक प्रसिद्ध **लोक-प्रेमगाथा** है।
18. **'राउलवेल'** (रोडा कवि) एक **शिलांकित कृति** है और यह हिन्दी का पहला **चम्पू काव्य** (गद्य-पद्य मिश्रित) है।
19. **'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण'** (दामोदर शर्मा) एक **व्याकरण ग्रंथ** है।
20. **'वर्ण रत्नाकर'** (ज्योतिरीश्वर ठाकुर) **मैथिली गद्य** की प्रथम रचना मानी जाती है।

सारणी 3.1: आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराएँ एवं विशेषताएँ

साहित्यिक धारा	प्रमुख विशेषता	प्रतिनिधि कवि/रचना	भाषा/शैली
रासो साहित्य	वीर एवं शृंगार रस, आश्रयदाताओं की प्रशंसा, ऐतिहासिकता का अभाव	चंदबरदाई (पृथ्वीराज रासो), जगनिक (परमाल रासो)	डिंगल, पिंगल
सिद्ध साहित्य	रहस्यवाद, तंत्र-साधना, पाखंड का विरोध, गुरु की महिमा	सरहपा, कण्हपा	संध्या भाषा (अपभ्रंश)
नाथ साहित्य	हठयोग, इंद्रिय-निग्रह, वैराग्य, सदाचार	गोरखनाथ (गोरखबानी)	सधुक्कड़ी
जैन साहित्य	धर्मोपदेश, आचार-विचार, शांत रस	देवसेन (श्रावकाचार), शालिभद्र सूरि	अपभ्रंश
लौकिक साहित्य	शृंगार, मनोरंजन, प्रेम-	अमीर खुसरो, विद्यापति,	खड़ी बोली, मैथिली,

	कथा	कल्लोल कवि	राजस्थानी

सारणी 3.2: आदिकाल के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

कवि	काल (अनुमानित)	प्रमुख रचना(एँ)	विशेष तथ्य
सरहपा	8वीं सदी	दोहाकोश	प्रथम सिद्ध कवि
स्वयंभू	8वीं सदी	पउम चरिउ	अपभ्रंश के वाल्मीकि
गोरखनाथ	10वीं-11वीं सदी	गोरखबानी, सबदी	नाथ पंथ के प्रवर्तक
चंदबरदाई	12वीं सदी	पृथ्वीराज रासो	हिन्दी के प्रथम महाकवि
जगनिक	12वीं सदी	परमाल रासो (आल्हा खंड)	वीरगाथात्मक लोककाव्य
अमीर खुसरो	13वीं-14वीं सदी	खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ	खड़ी बोली के आदि कवि
विद्यापति	14वीं-15वीं सदी	पदावली, कीर्तिलता, कीर्तिपताका	मैथिल कोकिल, अभिनव जयदेव

आदिकाल पर 20 वन-लाइनर तथ्य

प्रश्न 1: हिन्दी साहित्य के प्रथम चरण 'आदिकाल' की सर्वमान्य समय-सीमा क्या है?
उत्तर: संवत् 1050 से 1375 तक।
प्रश्न 2: आदिकाल को 'वीरगाथा काल' की संज्ञा किस विद्वान ने दी?
उत्तर: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने।
प्रश्न 3: 'आदिकाल' नाम, जो सर्वाधिक स्वीकृत है, किस विद्वान द्वारा दिया गया है?
उत्तर: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा।
प्रश्न 4: राहुल सांकृत्यायन ने आदिकाल को क्या नाम दिया है?
उत्तर: सिद्ध-सामंत काल।
प्रश्न 5: आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को क्या कहकर पुकारा?
उत्तर: बीजवपन काल।
प्रश्न 6: डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन और डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा दिया गया नाम क्या था?
उत्तर: चारण काल।
प्रश्न 7: किस सम्राट की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत राजनीतिक विखंडन का शिकार हुआ?
उत्तर: सम्राट हर्षवर्धन (मृत्यु 647 ई.)।
प्रश्न 8: आदिकाल में राष्ट्र की भावना का स्वरूप कैसा था?
उत्तर: संकुचित राष्ट्रीयता (केवल अपने राज्य तक सीमित)।
प्रश्न 9: आदिकालीन वीर काव्यों की रचना का मुख्य प्रेरक तत्व क्या था?
उत्तर: निरंतर युद्ध और असुरक्षा का वातावरण।
प्रश्न 10: आदिकालीन समाज किस व्यवस्था पर आधारित था?
उत्तर: सामंती व्यवस्था पर।
प्रश्न 11: समाज में प्रचलित कौन सी प्रथा अक्सर बड़े-बड़े युद्धों का कारण बनती थी?

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

उत्तर: स्वयंवर की प्रथा।

प्रश्न 12: आदिकालीन समाज में व्याप्त दो प्रमुख कुरीतियाँ कौन-सी थीं?

उत्तर: जौहर और सती प्रथा।

प्रश्न 13: आदिकाल में बौद्ध धर्म की कौन-सी विकृत शाखा प्रचलित थी जिसमें तंत्र-मंत्र का बोलबाला था?

उत्तर: वज्रयान शाखा।

प्रश्न 14: सिद्धों की वामाचारी भोग-प्रधान साधना की प्रतिक्रिया में किस पंथ का उदय हुआ?

उत्तर: नाथ-पंथ का।

प्रश्न 15: नाथ-पंथ के प्रमुख प्रणेता कौन माने जाते हैं?

उत्तर: गोरखनाथ।

प्रश्न 16: नाथ-पंथ के अनुयायी किस पर बल देते थे?

उत्तर: हठयोग, इन्द्रिय-निग्रह और नैतिक आचरण पर।

प्रश्न 17: आदिकाल में जैन मुनि किस भाषा के माध्यम से अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे?

उत्तर: अपभ्रंश भाषा के माध्यम से।

प्रश्न 18: चारण-भाट कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में किस प्रकार के ग्रंथ रचते थे?

उत्तर: वीरगाथात्मक 'रासो' ग्रंथ।

प्रश्न 19: आदिकाल में साहित्य-रचना की तीन प्रमुख धाराएँ कौन-सी थीं?

उत्तर: संस्कृत साहित्य, प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य और देशभाषा (हिन्दी) साहित्य।

प्रश्न 20: साधारण जनता का जीवन किन तीन बोझों तले पिस रहा था?

उत्तर: युद्ध, धर्म और शासन के तिहरे बोझ तले।

आदिकाल: बहुविकल्पीय प्रश्न 10

प्रश्न 1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा आदिकाल का नाम 'वीरगाथा काल' रखने का मुख्य आधार क्या था?
(क) चारण-भाट कवियों की भूमिका
(ख) सिद्ध योगियों और सामंती शासकों का प्रभाव
(ग) 'रासो' जैसे वीरगाथात्मक ग्रंथों की प्रचुरता
(घ) हिन्दी साहित्य के बीज बोए जाने का काल होना

प्रश्न 2. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

- **अभिकथन (A):** आदिकाल में 'संकुचित राष्ट्रीयता' की भावना प्रबल थी।
- **तर्क (R):** सम्राट हर्षवर्धन के पश्चात्, देश अनेक छोटे-छोटे गणराज्यों और सामंती ठिकानों में विभक्त हो गया था और शासकों की निष्ठा अपने राज्य तक ही सीमित थी।

उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(क) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(ख) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(घ) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

प्रश्न 3. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची-I (विद्वान)	**सूची-II (दिया गया नाम)**
a. राहुल सांकृत्यायन	i. बीजवपन काल

b. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	ii. आदिकाल
c. डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन	iii. सिद्ध-सामंत काल
d. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	iv. चारण काल

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(क) a-ii, b-iv, c-i, d-iii
(ख) a-iii, b-i, c-iv, d-ii
(ग) a-i, b-iii, c-ii, d-iv
(घ) a-iv, b-ii, c-iii, d-i

प्रश्न 4. आदिकालीन सामाजिक परिवेश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. समाज पूर्णतः सामंती व्यवस्था पर आधारित था।
2. समाज में नारी की स्थिति अत्यंत सम्मानजनक और सुदृढ़ थी।
3. स्वयंवर की प्रथा अक्सर युद्ध का कारण बनती थी।
4. साधारण जनता का जीवन युद्ध, धर्म और शासन के बोझ से मुक्त और सुखी था।

दिए गए विकल्पों में से सही कथन चुनें:
(क) केवल 1 और 2 सही हैं।
(ख) केवल 2 और 4 सही हैं।
(ग) केवल 1 और 3 सही हैं।
(घ) सभी कथन सही हैं।

प्रश्न 5. नाथ-पंथ का उदय किसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ?
(क) जैन मुनियों द्वारा अपभ्रंश में धर्म-प्रचार के

(ख) वैदिक एवं पौराणिक हिन्दू धर्म के प्रभाव के
(ग) विदेशी आक्रांताओं के आक्रमणों के
(घ) सिद्धों की वामाचारी, भोग-प्रधान और गुह्य साधनाओं के

प्रश्न 6. आदिकालीन साहित्य-रचना की प्रमुख धाराओं में कौन-कौन शामिल थीं?

1. संस्कृत साहित्य
2. प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य
3. देशभाषा (हिन्दी) साहित्य
4. फारसी दरबारी साहित्य

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर चुनिए:
(क) केवल 1 और 4
(ख) केवल 2, 3 और 4
(ग) केवल 1, 2 और 3
(घ) केवल 1 और 3

प्रश्न 7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक अभिकथन (A) और दूसरा तर्क (R) है:

- **अभिकथन (A):** आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा दिया गया नाम 'आदिकाल' सर्वाधिक स्वीकृत है।
- **तर्क (R):** यह नाम उस युग को किसी एक साहित्यिक प्रवृत्ति (जैसे- वीरता या शृंगार) में बाँधने के बजाय उसके अनिश्चित, प्रारंभिक और विभिन्न धाराओं से युक्त स्वरूप को समग्रता में इंगित करता है।

उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:
(क) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(ख) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(घ) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

प्रश्न 8. आदिकालीन धार्मिक परिवेश के संदर्भ में 'पंचमकार' (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन) का संबंध किस सम्प्रदाय से था?
(क) नाथ-पंथ
(ख) जैन धर्म
(ग) बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा
(घ) पौराणिक हिन्दू धर्म

प्रश्न 9. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची-I (विशेषता)	**सूची-II (संबंधित परिवेश)**
a. जौहर और सती प्रथा	i. राजनीतिक परिवेश
b. हठयोग और इन्द्रिय-निग्रह	ii. साहित्यिक परिवेश
c. विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण	iii. सामाजिक परिवेश
d. रासो काव्य की रचना	iv. धार्मिक परिवेश

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(क) a-iii, b-iv, c-i, d-ii
(ख) a-i, b-ii, c-iii, d-iv
(ग) a-iv, b-i, c-ii, d-iii
(घ) a-ii, b-iii, c-iv, d-i

प्रश्न 10. "शासक वर्ग (राजपूत) शौर्य और विलासिता के दोहरे जीवन में जीता था।" यह कथन आदिकाल के किस परिवेश की ओर संकेत करता है?
(क) धार्मिक परिवेश
(ख) राजनीतिक परिवेश
(ग) आर्थिक परिवेश
(घ) सामाजिक परिवेश

उत्तर कुंजी (Answer Key)

1. (ग) 'रासो' जैसे वीरगाथात्मक ग्रंथों की प्रचुरता
2. (क) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
3. (ख) a-iii, b-i, c-iv, d-ii
4. (ग) केवल 1 और 3 सही हैं।
5. (घ) सिद्धों की वामाचारी, भोग-प्रधान और गुह्य साधनाओं के
6. (ग) केवल 1, 2 और 3
7. (क) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
8. (ग) बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा
9. (क) a-iii, b-iv, c-i, d-ii
10. (घ) सामाजिक परिवेश

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year

- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend

- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

Professors Adda

Unlock Your Gift

Scan QR

Click Here Get Gift

Click Here Get Gift

Call/Wapp +91769002111, 921622-8788

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

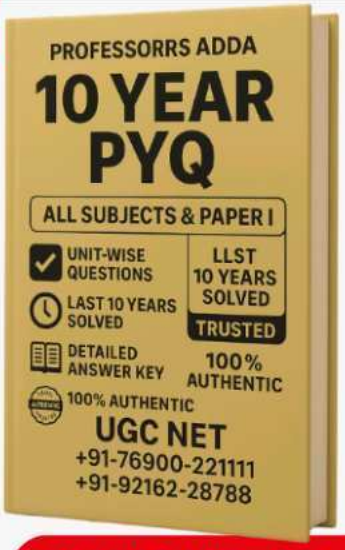

CLICK HERE

NEW PRODUCT

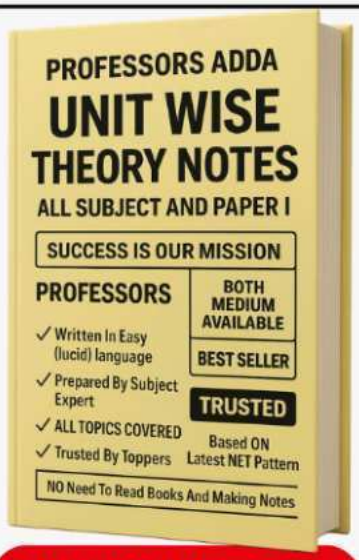

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

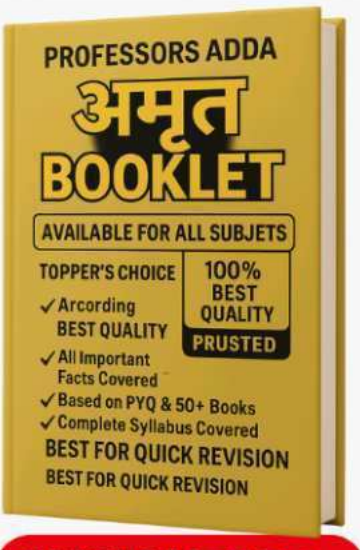

CLICK HERE

NEW PRODUCT

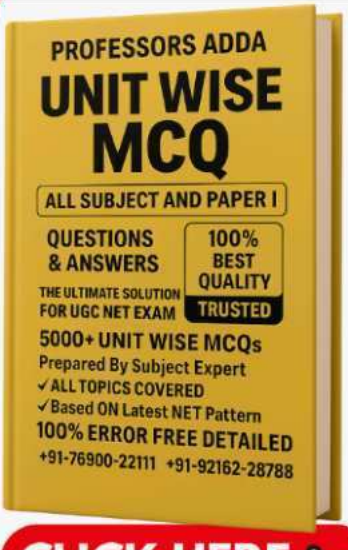

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

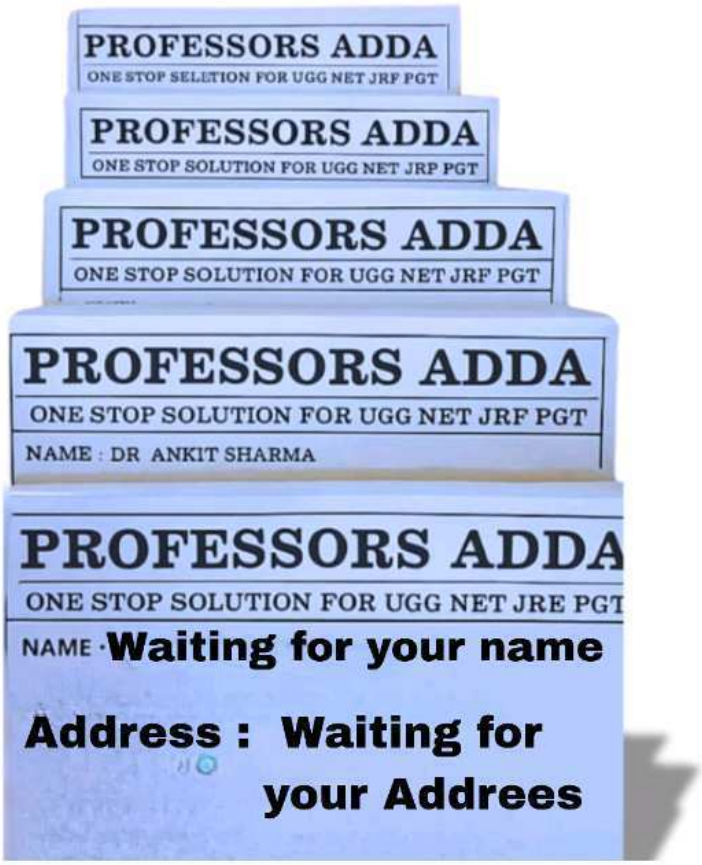

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

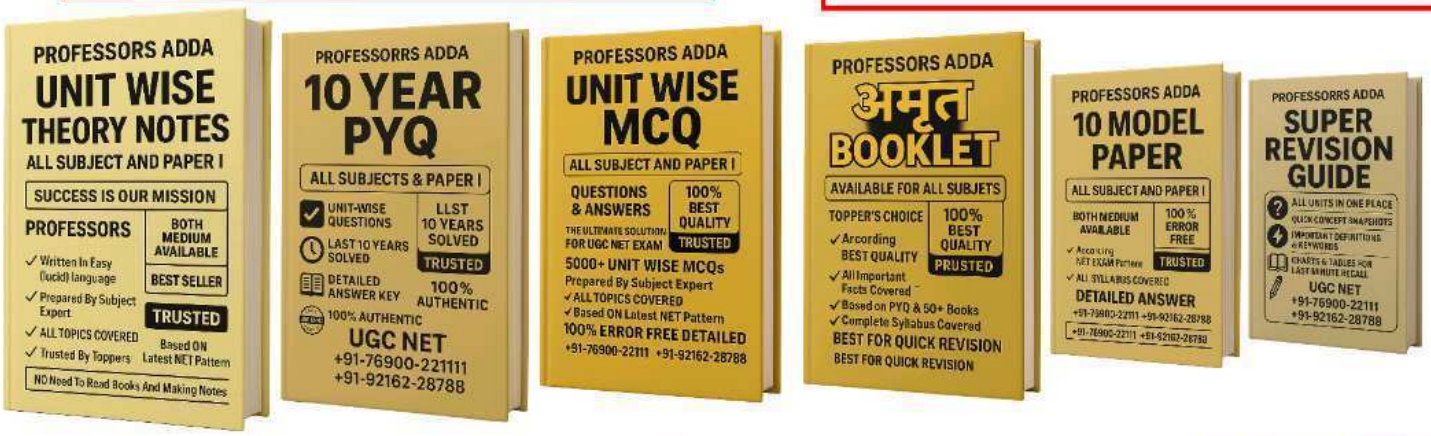

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR TELEGRAM FAMLY

CLICK HERE TO JOIN

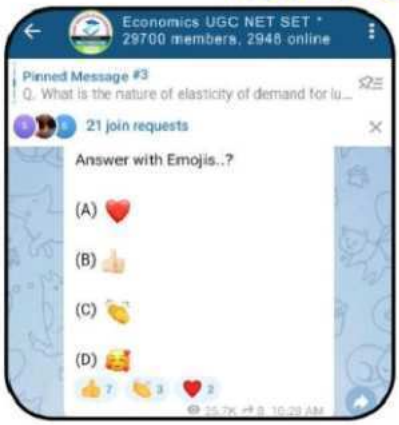

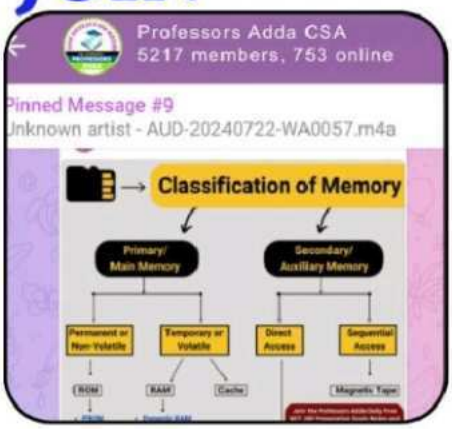

CLICK HERE

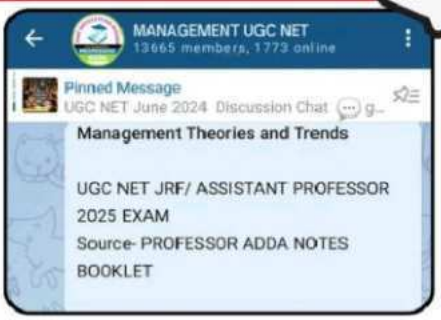

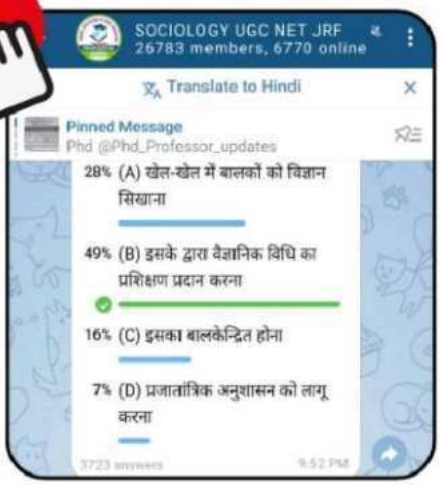

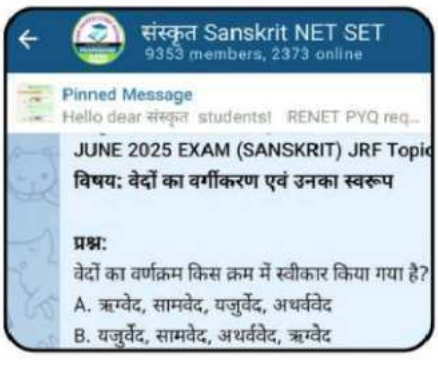

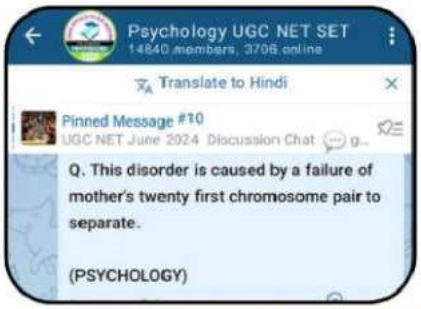

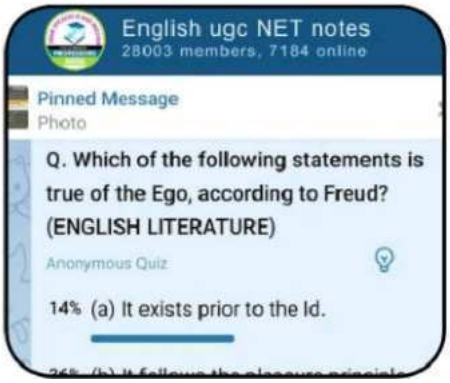

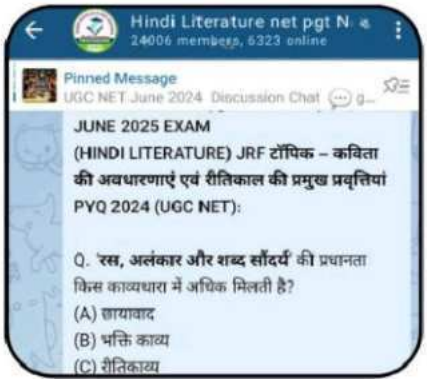

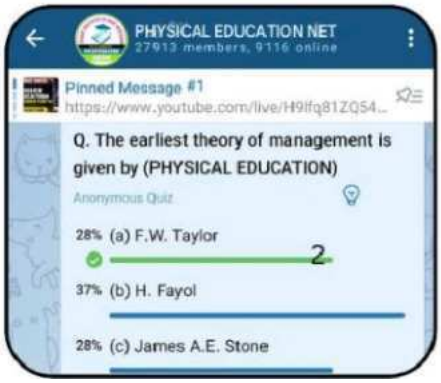

OUR हिंदी साहित्य AND PAPER 1 TELEGRAM GROUP

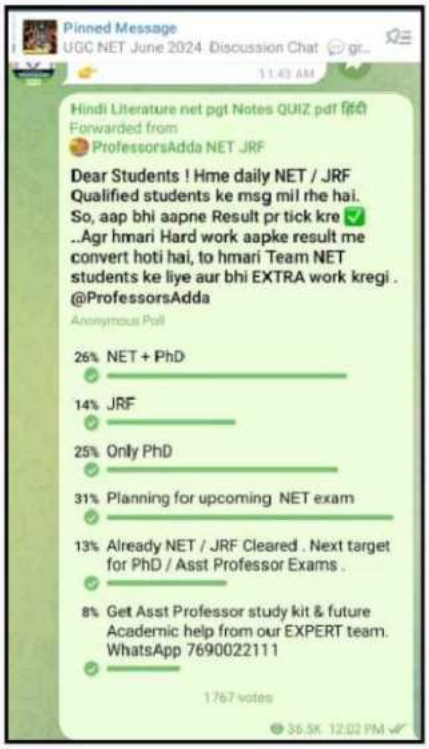

CLICK HERE TO JOIN

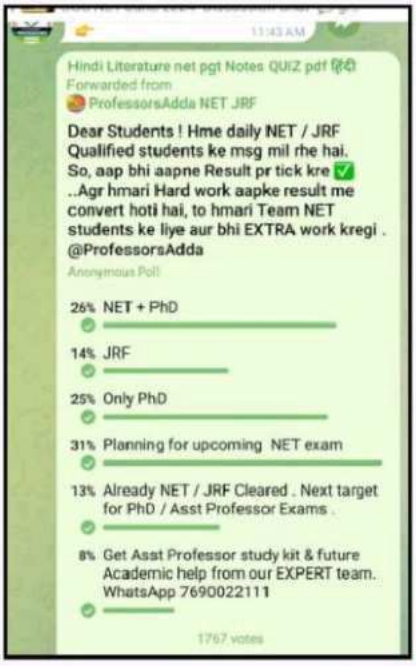

91-76900-22111

UGC NET हिन्दी: इकाई-1 (हिन्दी भाषा और उसका विकास)

प्रश्न 1: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं का सही कालक्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) वैदिक संस्कृत, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश
(B) वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत
(C) लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश
(D) पालि, प्राकृत, वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत

उत्तर: (B) वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत

व्याख्या:

1. **प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल:** इसका समय सामान्यतः 1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक माना जाता है।
2. **वैदिक संस्कृत:** यह सबसे प्राचीन भारतीय आर्यभाषा है, जिसका काल लगभग 1500 ई.पू. से 800 ई.पू. तक माना जाता है। वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों की रचना इसी भाषा में हुई।
3. **लौकिक संस्कृत:** इसका काल लगभग 800 ई.पू. से 500 ई.पू. तक माना जाता है। पाणिनि ने अपने प्रसिद्ध व्याकरण 'अष्टाध्यायी' में इसी भाषा को परिष्कृत और मानकीकृत किया। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना भी मुख्यतः इसी भाषा में हुई।
4. **पालि और प्राकृत:** ये मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ हैं, जिनका विकास लौकिक संस्कृत के बाद हुआ। पालि का काल 500 ई.पू. से पहली ईस्वी तक और विभिन्न प्राकृतों का काल पहली ईस्वी से 500 ईस्वी तक माना जाता है।
5. **भाषा का विकासक्रम:** भाषाओं का विकास एक सतत प्रक्रिया है। वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत का विकास हुआ, और फिर जनभाषाओं के रूप में पालि और विभिन्न प्राकृत भाषाएँ विकसित हुईं।
6. **महत्व:** यह कालक्रम भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 2: निम्नलिखित का मिलान कीजिए:

सूची-I (मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा)	सूची-II (मुख्य विशेषता/क्षेत्र)
a) पालि	i) पश्चिमी भारत में प्रचलित, जैन साहित्य की प्रमुख भाषा
b) शौरसेनी प्राकृत	ii) मागध क्षेत्र की भाषा, अशोक के अधिकांश शिलालेख

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

c) मागधी प्राकृत	iii) बौद्ध धर्म के त्रिपिटक की भाषा
d) अर्द्धमागधी प्राकृत	iv) मथुरा और शूरसेन प्रदेश की भाषा, नाटकों में प्रयुक्त

कूट:
(A) a-iii, b-iv, c-ii, d-i
(B) a-ii, b-i, c-iv, d-iii
(C) a-iii, b-i, c-ii, d-iv
(D) a-iv, b-iii, c-i, d-ii

उत्तर: (A) a-iii, b-iv, c-ii, d-i

व्याख्या:

1. **पालि (iii):** यह प्राचीनतम मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा है। भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश इसी भाषा में दिए थे और बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध ग्रंथ 'त्रिपिटक' की रचना पालि में ही हुई है। इसका काल 500 ई.पू. से पहली ईस्वी तक माना जाता है।
2. **शौरसेनी प्राकृत (iv):** यह मध्यदेश (शूरसेन अर्थात् मथुरा प्रदेश) की प्रमुख प्राकृत थी। यह नाटकों में गद्य की भाषा के रूप में प्रयुक्त होती थी और बाद में इससे शौरसेनी अपभ्रंश का विकास हुआ, जिससे पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी और गुजराती का विकास हुआ।
3. **मागधी प्राकृत (ii):** यह मगध क्षेत्र की प्राकृत थी। अशोक के अधिकांश पूर्वी शिलालेख इसी भाषा में मिलते हैं। नाटकों में निम्न श्रेणी के पात्र मागधी बोलते थे। इससे बिहारी, बंगला, असमिया और उड़िया भाषाओं का विकास हुआ।
4. **अर्द्धमागधी प्राकृत (i):** यह शौरसेनी और मागधी के बीच के क्षेत्र (कोसल, अवध) में बोली जाती थी। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अपने धर्मोपदेश इसी भाषा में दिए थे और अधिकांश प्राचीन जैन आगम (सूत्र) ग्रंथ इसी में रचित हैं।
5. **अन्य प्राकृतें:** इनके अतिरिक्त पैशाची, महाराष्ट्री आदि अन्य प्राकृतें भी थीं जिनका अपना महत्व था।
6. **विकास क्रम:** इन प्राकृतों से विभिन्न अपभ्रंशों का विकास हुआ, जो आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की जननी हैं।

प्रश्न 3: अभिकथन (A): अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी (अवहट्ठ) के बीच कोई सुस्पष्ट विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती।
तर्क (R): अवहट्ठ को परवर्ती अपभ्रंश या अपभ्रंशाभास हिन्दी भी कहा जाता है, जो अपभ्रंश से आधुनिक आर्यभाषाओं के संक्रमण काल की भाषा है।

कूट:

(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

व्याख्या:

1. **अपभ्रंश:** इसका काल सामान्यतः 500 ई. से 1000 ई. तक माना जाता है। यह मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा का अंतिम चरण है।
2. **अवहट्ठ:** इसे अपभ्रंश का परवर्ती या उत्तरकालीन रूप माना जाता है, जिसका समय लगभग 900 ई. से 1100 ई. तक है। कई विद्वान इसे 'अपभ्रष्ट' शब्द का विकृत रूप मानते हैं।
3. **संक्रमणकालीन भाषा:** अवहट्ठ वस्तुतः अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं (जैसे पुरानी हिन्दी) के बीच की संक्रमणकालीन कड़ी है। इसमें अपभ्रंश की प्रवृत्तियों के साथ-साथ आधुनिक भाषाओं के प्रारंभिक लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं।
4. **साहित्यिक प्रयोग:** विद्यापति ने अपनी रचना 'कीर्तिलता' की भाषा को 'अवहट्ठ' कहा है। अब्दुर रहमान की 'संदेश रासक' भी अवहट्ठ की महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है।
5. **सुस्पष्ट विभाजन का अभाव:** चूंकि यह एक संक्रमण काल की भाषा है, इसलिए अपभ्रंश की अंतिम अवस्था और पुरानी हिन्दी की प्रारंभिक अवस्था में इतना अधिक साम्य है कि उनके बीच कोई स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना कठिन होता है। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी जैसे भाषाविद् अवहट्ठ को अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के बीच की कड़ी मानते हैं।
6. **नामकरण:** चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने उत्तर अपभ्रंश को ही 'पुरानी हिन्दी' कहा है। भोलानाथ तिवारी इसे 'अपभ्रंश का उत्तरकालीन या परिवर्तित रूप' मानते हैं।

प्रश्न 4: आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के वर्गीकरण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सी भाषाएँ 'पश्चिमी हिन्दी' उपभाषा वर्ग के अंतर्गत आती हैं?
(i) खड़ी बोली
(ii) ब्रजभाषा
(iii) कन्नौजी
(iv) अवधी
(v) बुंदेली
(vi) बघेली

कूट:
(A) (i), (ii), (iii), (iv)
(B) (i), (ii), (iii), (v)

(C) (ii), (iii), (iv), (vi)
(D) (i), (iv), (v), (vi)

उत्तर: (B) (i), (ii), (iii), (v)

व्याख्या:

1. **आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण:** विभिन्न भाषाविदों ने भौगोलिक तथा संरचनात्मक समानताओं के आधार पर आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण किया है। जॉर्ज ग्रियर्सन का वर्गीकरण सर्वाधिक मान्य है।
2. **हिन्दी की उपभाषाएँ:** हिन्दी को मुख्यतः पाँच उपभाषा वर्गों में विभाजित किया जाता है: पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी और पहाड़ी।
3. **पश्चिमी हिन्दी:** इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख बोलियाँ आती हैं:
    - **खड़ी बोली (कौरवी):** आज की मानक हिन्दी का आधार यही बोली है। यह दिल्ली, मेरठ, बिजनौर, सहारनपुर आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।
    - **ब्रजभाषा:** यह मथुरा, आगरा, अलीगढ़, धौलपुर आदि क्षेत्रों की बोली है और मध्यकाल में कृष्ण भक्ति काव्य की प्रमुख भाषा रही है।
    - **कन्नौजी:** यह कन्नौज, इटावा, फर्रुखाबाद, हरदोई आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।
    - **बुंदेली:** यह झांसी, ग्वालियर, ओरछा, सागर, होशंगाबाद आदि बुंदेलखंड क्षेत्र की बोली है।
    - **हरियाणवी (बाँगरू):** यह हरियाणा और दिल्ली के देहाती क्षेत्रों में बोली जाती है।
4. **अवधी और बघेली:** ये पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ हैं, जिसका विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। अवधी लखनऊ, अयोध्या, प्रयागराज आदि क्षेत्रों में और बघेली रीवा, सतना, शहडोल आदि क्षेत्रों में बोली जाती है।
5. **महत्व:** उपभाषाओं और बोलियों का ज्ञान हिन्दी के भौगोलिक विस्तार और उसके विविध रूपों को समझने में सहायक होता है।

प्रश्न 5: "हिन्दी, उर्दू, दक्खिनी, हिन्दुस्तानी" - हिन्दी के इन विविध रूपों में से किस रूप का आधार खड़ी बोली है, लेकिन उसमें अरबी-फारसी के शब्दों का बाहुल्य होता है और वह फारसी लिपि में लिखी जाती है?
(A) हिन्दी
(B) उर्दू
(C) दक्खिनी
(D) हिन्दुस्तानी

उत्तर: **(B)** उर्दू

व्याख्या:

1. **हिन्दी के विविध रूप:** ऐतिहासिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों से हिन्दी के कई रूप विकसित हुए हैं।
2. **हिन्दी:** मानक हिन्दी, जिसका आधार खड़ी बोली है और जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इसमें तत्सम (संस्कृत) शब्दों का प्रयोग अधिक होता है।
3. **उर्दू:** इसका भी आधार खड़ी बोली ही है, परन्तु इसमें अरबी-फारसी के शब्दों की प्रचुरता होती है और यह मुख्य रूप से फारसी-अरबी लिपि (नस्तालीक़) में लिखी जाती है। इसका विकास दिल्ली के आसपास हुआ।
4. **दक्खिनी:** यह हिन्दी का वह रूप है जो 14वीं-18वीं शताब्दी में दक्षिण भारत (मुख्यतः गोलकुंडा, बीजापुर) में साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुआ। इसमें खड़ी बोली के साथ पंजाबी, हरियाणवी और स्थानीय द्रविड़ भाषाओं के तत्व भी मिश्रित हैं। यह फारसी और देवनागरी दोनों लिपियों में लिखी जाती थी।
5. **हिन्दुस्तानी:** यह हिन्दी और उर्दू का मिश्रित रूप है, जिसे महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने का समर्थन किया था। यह आम बोलचाल की भाषा है जिसमें संस्कृत और अरबी-फारसी दोनों के सरल शब्द प्रयुक्त होते हैं। यह देवनागरी और फारसी दोनों लिपियों में लिखी जा सकती है।
6. **आधारभूत समानता:** इन सभी रूपों का व्याकरणिक ढाँचा मूलतः खड़ी बोली पर ही आधारित है, शब्दावली और लिपि में भिन्नता प्रमुख है।

प्रश्न 6: निम्नलिखित हिन्दी की उपभाषाओं और उनकी प्रमुख बोलियों का मिलान कीजिए:

सूची-I (उपभाषा)	सूची-II (प्रमुख बोली)
a) पूर्वी हिन्दी	i) मेवाती
b) राजस्थानी	ii) भोजपुरी
c) बिहारी	iii) कुमाउँनी
d) पहाड़ी	iv) छत्तीसगढ़ी

कूट:
(A) a-iv, b-i, c-ii, d-iii
(B) a-i, b-iv, c-iii, d-ii
(C) a-iv, b-ii, c-i, d-iii
(D) a-ii, b-iii, c-iv, d-i

उत्तर: **(A) a-iv, b-i, c-ii, d-iii**

व्याख्या:

1. **पूर्वी हिन्दी (iv - छत्तीसगढ़ी):** इसका विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसकी तीन प्रमुख बोलियाँ हैं:
   - **अवधी:** लखनऊ, अयोध्या, सीतापुर, प्रयागराज।
   - **बघेली:** रीवा, सतना, मैहर, शहडोल।
   - **छत्तीसगढ़ी:** रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, रायगढ़ (छत्तीसगढ़ राज्य की प्रमुख बोली)।
2. **राजस्थानी (i - मेवाती):** इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के एक रूप नागर अपभ्रंश से माना जाता है। इसकी चार मुख्य बोलियाँ हैं:
   - **मारवाड़ी (पश्चिमी राजस्थानी):** जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर।
   - **जयपुरी/ढूंढाड़ी (पूर्वी राजस्थानी):** जयपुर, अजमेर।
   - **मेवाती (उत्तरी राजस्थानी):** अलवर, भरतपुर, गुड़गांव।
   - **मालवी (दक्षिणी राजस्थानी):** इंदौर, उज्जैन, रतलाम, भोपाल।
3. **बिहारी (ii - भोजपुरी):** इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसकी तीन प्रमुख बोलियाँ हैं:
   - **भोजपुरी:** पूर्वी उत्तर प्रदेश (बनारस, गोरखपुर) और पश्चिमी बिहार (आरा, छपरा)।
   - **मगही:** गया, पटना, हजारीबाग।
   - **मैथिली:** दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया (इसे अब स्वतंत्र भाषा का दर्जा भी प्राप्त है)।
4. **पहाड़ी (iii - कुमाउँनी):** इसका विकास खस अपभ्रंश से माना जाता है (कुछ विद्वान शौरसेनी से भी प्रभावित मानते हैं)। इसकी दो मुख्य शाखाएँ हैं:
   - **पश्चिमी पहाड़ी:** जौनसारी, सिरमौरी आदि (हिमाचल प्रदेश)।
   - **मध्य पहाड़ी:** गढ़वाली और कुमाउँनी (उत्तराखंड)। नेपाली भी इसी वर्ग की भाषा है।
5. **महत्व:** यह वर्गीकरण हिन्दी के व्यापक क्षेत्र और उसकी भाषाई विविधता को दर्शाता है।
6. **स्रोत अपभ्रंश:** पश्चिमी हिन्दी और राजस्थानी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से, पूर्वी हिन्दी का अर्द्धमागधी से, बिहारी का मागधी से और पहाड़ी का खस अपभ्रंश से हुआ है।

प्रश्न 7: अभिकथन (A): देवनागरी लिपि अक्षरात्मक (syllabic) लिपि है, ध्वन्यात्मक (phonetic) नहीं।
तर्क (R): देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट लिपि चिह्न (वर्ण) है और जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है।

कूट:
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।

व्याख्या:

1. **अभिकथन (A) - देवनागरी लिपि अक्षरात्मक है:** यह कथन सही है। देवनागरी लिपि में मूल इकाई 'अक्षर' होती है, जिसमें एक व्यंजन और एक स्वर का योग होता है (जैसे 'क' = क् + अ)। प्रत्येक व्यंजन में 'अ' स्वर अंतर्निहित माना जाता है, जब तक कि हलंत लगाकर उसे स्वर रहित न दर्शाया जाए। रोमन लिपि वर्णनात्मक (alphabetic) है, जहाँ स्वर और व्यंजन अलग-अलग लिखे जाते हैं।
2. **तर्क (R) - देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट लिपि चिह्न है और जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है:** यह कथन पूर्णतः सही नहीं है, यद्यपि देवनागरी को वैज्ञानिक लिपियों में गिना जाता है।
   - **"प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट लिपि चिह्न":** यह काफी हद तक सत्य है, लेकिन कुछ अपवाद हैं, जैसे 'श', 'ष', 'स' का उच्चारण कई क्षेत्रों में समान हो जाता है, या 'ऋ' का उच्चारण 'रि' जैसा होता है। इसी प्रकार 'ज्ञ' (ज्+ञ) और 'क्ष' (क्+ष) संयुक्त ध्वनियाँ हैं जिनके लिए पृथक वर्ण हैं।
   - **"जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है":** यह देवनागरी की एक बड़ी विशेषता है, लेकिन पूर्णतः ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए, 'राम' में अंतिम 'अ' का उच्चारण प्रायः नहीं होता, पर लिखा जाता है। कुछ शब्दों में अनुस्वार और अनुनासिक के लेखन और उच्चारण में सूक्ष्म भेद होते हैं।
3. **व्याख्या का संबंध:** तर्क (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता। लिपि का अक्षरात्मक होना उसकी संरचना से संबंधित है, जबकि तर्क (R) उसकी ध्वन्यात्मक सटीकता और लेखन-उच्चारण संगति की बात कर रहा है।
4. **देवनागरी की विशेषताएं:** यह बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है, शिरोरेखा का प्रयोग होता है, वर्णमाला का क्रम वैज्ञानिक है (पहले स्वर, फिर व्यंजन; व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान और प्रयत्न के आधार पर)।
5. **मानकीकरण:** भारत सरकार ने देवनागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण किया है ताकि लेखन में एकरूपता लाई जा सके।
6. **निष्कर्ष:** देवनागरी अक्षरात्मक लिपि है और काफी हद तक ध्वन्यात्मक भी है, परन्तु तर्क (R) में दिया गया कथन कि "जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है" और "प्रत्येक ध्वनि के लिए एक विशिष्ट चिह्न है" पूर्णतः और सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है, और यह अक्षरात्मक होने का सीधा कारण भी नहीं है।

प्रश्न 8: भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में कब और किन अनुच्छेदों के तहत मान्यता प्रदान की गई?
(i) 14 सितम्बर 1949
(ii) 26 जनवरी 1950

(iii) अनुच्छेद 343 से 351 तक
(iv) अनुच्छेद 352 से 360 तक
(v) आठवीं अनुसूची में

कूट:
(A) (i), (iii), (v)
(B) (ii), (iv)
(C) (i), (iii)
(D) (ii), (iii), (v)

उत्तर: (C) (i), (iii)

व्याख्या:

1. **राजभाषा के रूप में स्वीकृति (i):** संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी कारण प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।
2. **संवैधानिक प्रावधान (iii):** भारतीय संविधान के भाग 17 में, अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए हैं।
   - **अनुच्छेद 343(1):** इसके अनुसार, "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।"
   - **अनुच्छेद 343(2):** यह प्रावधान किया गया कि संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक (अर्थात् 1965 तक) उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता रहेगा जिनके लिए वह पहले प्रयुक्त होती थी।
   - **अनुच्छेद 344:** राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति के गठन का प्रावधान।
   - **अनुच्छेद 345-347:** राज्यों की राजभाषा/राजभाषाओं से संबंधित।
   - **अनुच्छेद 348:** उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में, और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा से संबंधित।
   - **अनुच्छेद 351:** हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिए गए हैं, ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।
3. **आठवीं अनुसूची (v):** संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत की प्रमुख भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है। प्रारंभ में इसमें 14 भाषाएँ थीं, वर्तमान में 22 भाषाएँ हैं। हिन्दी भी इनमें से एक है, लेकिन यह अनुसूची राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थापना से सीधे तौर पर जुड़ी नहीं है, बल्कि मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची है। राजभाषा का दर्जा अनुच्छेद 343 द्वारा प्रदान किया गया है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

4. **26 जनवरी 1950 (ii):** इस दिन भारतीय संविधान लागू हुआ था। हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय पहले ही (14 सितम्बर 1949 को) लिया जा चुका था।
5. **अनुच्छेद 352 से 360 (iv):** ये अनुच्छेद आपातकालीन उपबंधों से संबंधित हैं, राजभाषा से नहीं।
6. **महत्व:** संवैधानिक प्रावधानों ने हिन्दी को राष्ट्रव्यापी प्रशासनिक और संचार की भाषा के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रश्न 9: हिन्दी शब्द रचना में 'उपसर्ग' और 'प्रत्यय' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) उपसर्ग शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, जबकि प्रत्यय शब्द के आरंभ में।
(B) उपसर्ग और प्रत्यय दोनों शब्द के मध्य में जुड़ते हैं।
(C) उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाते हैं, जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं या अर्थ में परिवर्तन करते हैं।
(D) उपसर्ग केवल संस्कृत शब्दों में लगते हैं, और प्रत्यय केवल हिन्दी शब्दों में।

उत्तर: (C) उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाते हैं, जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं या अर्थ में परिवर्तन करते हैं।

व्याख्या:

1. **शब्द रचना:** भाषा में नए शब्दों का निर्माण विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा होता है, जिनमें उपसर्ग, प्रत्यय और समास प्रमुख हैं। ये शब्दांश होते हैं जो मूल शब्दों के साथ जुड़कर नए अर्थ प्रदान करते हैं।
2. **उपसर्ग (Prefix):** उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के आरंभ (पहले) में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं।
    - उदाहरण: 'हार' शब्द में 'प्र' उपसर्ग जोड़ने पर 'प्रहार' (चोट करना), 'आ' जोड़ने पर 'आहार' (भोजन), 'वि' जोड़ने पर 'विहार' (घूमना), 'सम्' जोड़ने पर 'संहार' (नाश करना) बनता है।
    - हिन्दी में संस्कृत, हिन्दी और उर्दू-फारसी के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं। जैसे - अति, अधि, अनु (संस्कृत); अ, अन, अध (हिन्दी); कम, खुश, गैर (उर्दू-फारसी)।
3. **प्रत्यय (Suffix):** प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं या शब्द के अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।
    - उदाहरण: 'लिख' धातु में 'आवट' प्रत्यय जोड़ने पर 'लिखावट', 'समाज' शब्द में 'इक' प्रत्यय जोड़ने पर 'सामाजिक' बनता है।
    - प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं:
        - **कृत् प्रत्यय:** जो क्रिया या धातु के अंत में जुड़कर संज्ञा या विशेषण शब्द बनाते हैं (जैसे - लेखक, तैराक)। इनसे बने शब्द 'कृदंत' कहलाते हैं।

- **तद्धित प्रत्यय:** जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जुड़कर नए संज्ञा या विशेषण शब्द बनाते हैं (जैसे - मानवता, बचपन, सुनार)। इनसे बने शब्द 'तद्धितांत' कहलाते हैं।

4. **कथन (A) गलत है:** उपसर्ग आरंभ में और प्रत्यय अंत में जुड़ते हैं।
5. **कथन (B) गलत है:** ये शब्द के मध्य में नहीं जुड़ते।
6. **कथन (D) गलत है:** उपसर्ग और प्रत्यय संस्कृत, हिन्दी, उर्दू-फारसी आदि विभिन्न स्रोतों के शब्दों में प्रयुक्त होते हैं।

प्रश्न 10: हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूपों और उनकी प्रमुख विशेषताओं का मिलान कीजिए:

सूची-I (भाषा प्रयोग का रूप)	सूची-II (प्रमुख विशेषता)
a) बोली	i) सरकारी कामकाज, शिक्षा, संचार माध्यमों में प्रयुक्त परिनिष्ठित एवं सर्वमान्य रूप
b) मानक भाषा (परिनिष्ठित भाषा)	ii) विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के बीच संपर्क का माध्यम
c) राजभाषा	iii) सीमित क्षेत्र में प्रयुक्त, स्थानीय घरेलू बोलचाल का रूप, व्याकरणिक एकरूपता का अभाव
d) संपर्क भाषा	iv) संविधान द्वारा सरकारी कामकाज के लिए स्वीकृत भाषा

कूट:
(A) a-iii, b-i, c-iv, d-ii
(B) a-i, b-iii, c-ii, d-iv
(C) a-iii, b-iv, c-i, d-ii
(D) a-ii, b-i, c-iv, d-iii

उत्तर: (A) a-iii, b-i, c-iv, d-ii

व्याख्या:

1. **बोली (iii - सीमित क्षेत्र में प्रयुक्त...):**
   - यह भाषा का सबसे छोटा और सीमित रूप होता है, जो एक छोटे भौगोलिक क्षेत्र में स्थानीय लोगों द्वारा घरेलू बोलचाल में प्रयुक्त होता है।
   - इसमें प्रायः व्याकरणिक एकरूपता का अभाव होता है और यह मुख्य रूप से मौखिक होती है। इसमें साहित्यिक रचनाएँ कम होती हैं या नहीं होतीं।
   - उदाहरण: भोजपुरी, अवधी, मारवाड़ी (जब ये अपने सीमित क्षेत्र में केवल बोलचाल के लिए प्रयुक्त हों)।
2. **मानक भाषा (परिनिष्ठित भाषा) (i - सरकारी कामकाज, शिक्षा...):**
   - जब कोई बोली व्याकरणिक रूप से परिष्कृत होकर, शिक्षित वर्ग द्वारा अपना ली जाती

है और शिक्षा, साहित्य, सरकारी कामकाज तथा संचार माध्यमों में प्रयुक्त होने लगती है, तो वह मानक भाषा का रूप ले लेती है।
    - इसमें एकरूपता होती है और इसका अपना व्याकरण व शब्दकोश होता है।
    - उदाहरण: आज की मानक हिन्दी (खड़ी बोली पर आधारित)।
3. **राजभाषा (iv - संविधान द्वारा सरकारी कामकाज...):**
    - वह भाषा जिसे किसी देश के संविधान द्वारा सरकारी कामकाज, प्रशासन, संसद, न्यायालय आदि के लिए स्वीकृत किया जाता है, राजभाषा कहलाती है।
    - भारत की राजभाषा हिन्दी है (अनुच्छेद 343)। अंग्रेजी सह-राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है।
4. **संपर्क भाषा (Link Language) (ii - विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के बीच संपर्क...):**
    - वह भाषा जो विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच आपसी विचार-विनिमय या संपर्क स्थापित करने के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है।
    - भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है। अंग्रेजी भी भारत में एक प्रमुख संपर्क भाषा है।
5. **राष्ट्रभाषा:** वह भाषा जो किसी राष्ट्र के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है, और जिसमें उस राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास और आदर्शों की अभिव्यक्ति होती है। भारत में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का वास्तविक दर्जा प्राप्त है, यद्यपि संवैधानिक रूप से इसे 'राजभाषा' कहा गया है।
6. **इन रूपों का अंतर्संबंध:** एक बोली विकसित होकर मानक भाषा बन सकती है, और मानक भाषा को राजभाषा या राष्ट्रभाषा का दर्जा मिल सकता है।

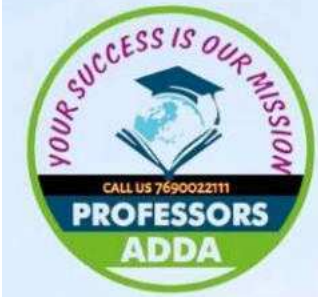

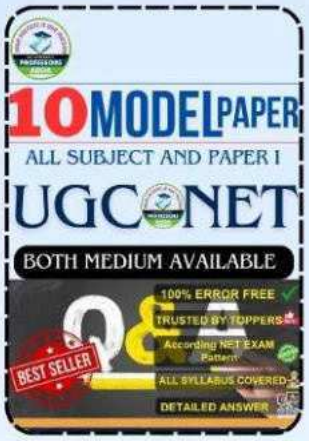

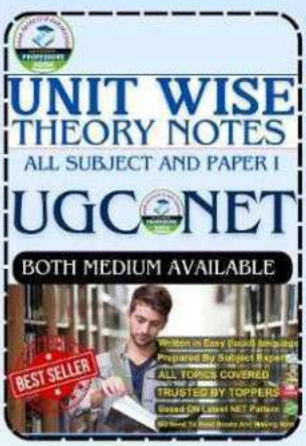

YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
Based ON UGC Authorised Answers KEY
360 Guidance
Highest Success Rate in India
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

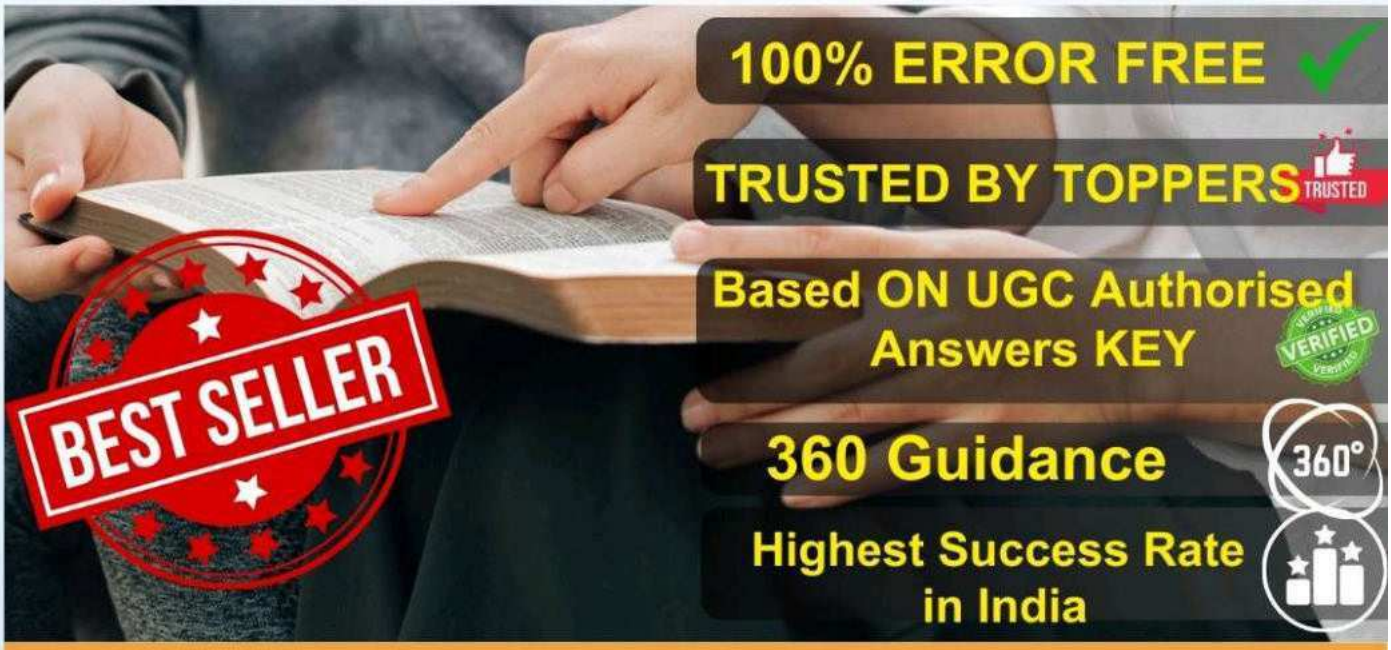

यू.जी.सी. नेट (पुनः परीक्षा) हिन्दी 21-08-2024

1. झुनिया को शरण देने पर पंचायत का दंड चुकाने के लिए होरी ने किसके हाथ अपने घर को अस्सी रुपए में गिरो रखा।
(a) झिंगुरी सिंह
(b) दातादीन
(c) लाला पटेश्वरी
(d) नोखेराम

Ans. (a)

2. कला के किस क्षण से फैण्टेसी साहित्यिक कलात्मक अभिव्यक्ति का रूप धारण करने लगती है?
(a) कला के उद्गम क्षण से
(b) कला के पहले क्षण से
(c) कला के दूसरे क्षण से
(d) कला के तीसरे क्षण से

Ans. (d)

3. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में आई पंक्तियों को पहले से बाद के क्रम में व्यवस्थित कीजिए :
A. बिहार से जब मैं बाहर निकला, तो चित्त प्रसन्न था। आती बार मैंने रास्ते की ओर दृष्टि ही नहीं दी थी।
B. निपुणिका आंगन के बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। उसकी सखी बनकर मैं जब बाहर आया, तो
C. यहापि बाणभट्ट नाम से ही मेरी प्रसिद्धि है; पर यह मेरा वास्तविक नाम नहीं है।
D. निपुणिका ने अपनी स्वामिनी को छिपा रखने के लिए जिस स्थान को चुना था, उसके दर्शन-मात्र से मेरा हृदय बैठ गया।
E. भावी जीवन की रंगीन कल्पनाओं में डूबते-उतराते मनुष्य को आस-पास देखने की फुर्सत कहाँ होती है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) B, E, C, A, D
(b) C, E, B, D, A
(c) C, B, E, D, A
(d) B, C, E, A, D

Ans. (b)

4. 'मजदूरी और प्रेम' निबंध के अनुसार सूची-1 के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (फकीर)	सूची-II (मजदूरी का जीवन)
A. जोन ऑफ आर्क	I. जूते गांठना
B. टालस्टाय	II. रंगमहलों में चटाई आदि बुनना
C. उमर खैयाम	III. भेड़े चराना
D. खलीफा उमर	IV. तम्बू सीना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
A B C D
(a) II I IV III
(b) III I IV II

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

(c) III IV I II
(d) II IV I II

5. गैंग्रीन (रोज) कहानी के संबंध में उचित कधन है।
A. मालती को अपने परिवार और गृहस्थी से सुख का अनुभव होता था।
B. मालती के पति सरकारी डॉक्टर थे।
C. सरकारी अस्पताल और डॉक्टर के प्रति उसके मन में अच्छी भावना थी।
D. मालती ने पिता के द्वारा लाई किताब फाड़ कर फेंक दी थी।
E. मालती के शिशु को चोटें लगती ही रहती हैं, रोज ही गिर पड़ता है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A, B और D
(c) केवल B, D और E
(b) केवल B, C और D
(d) केवल A, D और E

Ans. (c)

6. 'बलरामपुर' नामक स्थान का उल्लेख किस कहानी में हुआ है?
(a) राजा निरबंसिया
(b) लाल पान की बेगम
(c) आकाशदीप
(d) मारे गये गुलफाम उर्फ तीसरी कसम

Ans. (b)

7. "प्रत्येक वस्तु की निर्भरता चूँकि प्रौद्योगिकी पर होगी इसलिए विकसित एवं विकासशील समाजों के मध्य दूरी कम नहीं होगी, वरन् बढ़ेगी।" उक्त मंतव्य किस विचारक ने व्यक्त किया है?
(a) ल्योतार्द
(b) फ्रेडरिक जेमेसन
(c) टेरी इगलटन
(d) देरीदा

Ans. (a)

8. 'राम की शक्ति पूजा' की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं
A. इसका मूल स्त्रोत कृतिवास का बंगला रामायण है।
B. शक्तिपूजा के प्रसंगों में राम की पराजय का कहीं भी उल्लेख नहीं है।
C. अन्याय जिधर है, शक्ति को भी उधर ही होना चाहिए।
D. पूरी कविता में अंधकार-प्रकाश का द्वंद्वयुद्ध निरंतर चलता रहता है।
E. यह कविता निराशा का महिमामंडन नहीं करती है। नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A, B, C
(b) केवल A, D, E
(c) केवल A, C, D
(d) केवल B, C, D

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

Ans. (b)

9. काव्य भाषा के संदर्भ में वड्र्सवर्थ के उपयुक्त कथन हैं-
A. प्रशांत मनोदशा में भावों का अनुस्मरण आवश्यक नहीं है।
B. काव्य प्रबल भावों का सहज उच्छलन है।
C. भावदीप्त मनोदशा में रचना का आरंभ होता है।
D. भाव चाहे जिन कारणों से उत्पन्न हों, मन को आनंदित करते हैं।
E. ग्रामीण भाषा काव्य के लिए उपयुक्त नहीं है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल B, C, D
(b) केवल A, B, E
(c) केवल A, D, E
(d) केवल B, D, E

Ans. (a)

10. शिवपालगंज के बारे में किसे ऐसा लगने लगता है कि महाभारत की तरह, जो कहीं नहीं है वह यहाँ है, और जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है?
(a) रुप्पन बाबू
(b) वैद्य जी
(c) रंगनाथ
(d) बद्री

Ans. (c)

11. "इस सौन्दर्य के सामने जीवन की सब सुविधाएँ हेय हैं। इसे आँखों में व्याप्त करने के लिए जीवन-भर का समय भी पर्याप्त नहीं।" 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का उक्त संवाद किसका है?
(a) प्रियंगुमंजरी
(b) मल्लिका
(c) कालिदास
(d) विलोम

Ans. (a)

12. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए :

सूची-I (परिचय)	सूची-II (पात्र)
A. रायसाहब का कारकुन	I. झिंगुरी सिंह
B. सबसे बड़े महाजन	II. श्याम बिहार तंखा
C. बीमा कंपनी की दलाली	III. पंडित नोखेराम
D. बैंक मैनेजर और शक्कर मिल के मैनेजिंग डायरेक्टर	IV. मिस्टर खन्ना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
A B C D
(a) I IV II III
(b) I II IV III

PROFESSORS ADDA

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

(c) III II I IV
(d) III I II IV

Ans. (d)

13. 'आधे अधूरे' नाटक में पहले मंचन के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य मिलते हैं -
A. बड़ी लड़की की भूमिका ऋचा व्यास ने निभाई।
B. इसका पहला मंचन 'दिशांतर' नाट्य संस्था द्वारा किया गया।
C. इसका निर्देशन श्री ओम शिवपुरी ने किया।
D. छोटी लड़की की भूमिका अनुराधा कपूर ने निभाई।
E. इसका मंचन फरवरी 1969 ई. में हुआ।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A, C और E
(b) केवल B, C और D
(c) केवल B, C और E
(d) केवल A, B और E

Ans. (c)

14. 'कविता क्या है?' निबंध से संबंधित सत्य कथन हैं—
A. इस शीर्षक से शुक्ल जी ने 1909 में एक छोटा सा लेख लिखा था।
B. निरंतर संशोधन-परिवर्धन के द्वारा अंततः 1929 में इसे अंतिम रूप प्राप्त हुआ।
C. कविता का अंतिम लक्ष्य मनुष्य हृदय से सामंजस्य स्थापना करके उनके साथ जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण है।
D. सौन्दर्य बाहर और मन के भीतर की वस्तु है।
E. मनुष्य को कर्म में प्रवृत्त करने वाली मूल प्रवृत्ति भावात्मिका है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A, B, E
(b) केवल A, B, D
(c) केवल B, C, D
(d) केवल B, D, E

Ans. (a)

15. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में ध्रुवस्वामिनी के संवादों को पहले से बाद के क्रम में लगाएँ -
A. लौट जाओ, इस तुच्छ नारी, जीवन के लिए इतने महान उत्सर्ग की आवश्यकता नहीं।
B. चन्द्रे ! तुम मुझे दोनों ओर से नष्ट न करो। यहाँ से लौट जाने पर भी क्या मैं गुप्तकुल के रहने पाऊँगी? अन्तःपुर में
C. तो फिर मेरा और तुम्हारा जीवन-मरण साथ ही होगा।
D. चन्द्रे ! मेरे भाग्य के आकाश में धूमकेतु-सी अपनी गति बंद करो।
E. अपनी कामना की वस्तु न पाकर यह आत्महत्या जैसा प्रसंग तो नहीं है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A, B, D, E, C
(C) B, E, A, C, D
(b) A, E, B, D, C

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

(d) B, A, E, D, C

Ans. (b)

Let's Crack #JRF Asst Professor / Phd

ALL UGC NET SUBJECT AVAILABLE

Study group Benefits with privacy ⬇

1. Concept/ Theory pdf Notes
2. MCQ Quiz
3. Latest PYQs
4. Quick Revision Amriut
5. Model Test Papers
6. Current Affairs Focus
7. All India Rank
8. Latest exam Updates
9. Brain Booster facts

Free Free --- Join UGC NET
Subject wise Free study group.
ALL subject available.
send us Subject + medium on this number 7690022111. Our team will add you
Click on link to join
https://wa.link/9r0r0

Don't Miss this opportunity
Join & share..... आज ही जुड़े और अपनी NET / JRF एक बार मे सफलता सुनिश्चित करे .
Contact to team to join +91 769000-22111 +91 92162-28788

16. 'मानस का हंस' से संबंधित निम्नलिखित तथ्यों में से सही तथ्यों का चयन कीजिए-
A. 'मानस का हंस' लिखने का विचार नागर जी को महेश कौल के साथ बात करते हुए आया था।
B. दोहावली और गीतावली में तुलसी की जीवन- झाँकी खास तौर पर मिलती है।
C. उपन्यास में तुलसी के जन्म स्थान के रूप में राजापुर को चित्रित किया है।
D. इस उपन्यास को लिखने से पहले नागर जी ने 'कवितावली' और 'विनयपत्रिका' को खास तौर पर पढ़ा।
E. रघुबरदास जी 'मूल गोसाई चरित' के लेखक माने जाते हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A, B, C
(b) केवल A, C, D
(c) केवल B, C, D
(d) केवल C, D, E

Ans. (b)

17. बच्चन सिंह के अनुसार रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का उद्घाटन सर्वप्रथम किस आलोचक ने किया?
(a) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) नंददुलारे वाजपेयी
(c) रामविलास शर्मा
(d) शांतिप्रिय द्विवेदी

Ans. (b)

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

18. "जितना ग्राम गीत शीघ्र फैलते हैं और जितना काव्य को संगीत द्वारा सुनकर चित्त पर प्रभाव पड़ता है उतना साधारण शिक्षा से नहीं होता।" उक्त कथन किस लेखक का है?
(a) शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द'
(b) राधाकृष्ण दास
(c) भारतेंदु हरिश्चंद्र
(d) प्रताप नारायण मिश्र

Ans. (c)

19. "जब आप अपने को राजनीतिक अधिकारों की तुला पर कमजोर पाते हैं, तो आप सामाजिक व्यवस्था भी अच्छी नहीं बना सकते। और जब तक आपकी सामाजिक व्यवस्था तर्क और न्याय पर आधारित नहीं है, तब तक आप राजनीतिक अधिकारों का उपयोग करने के योग्य भी नहीं हो सकते।" कथन किस समाज सुधारक का है?
(a) राजाराम मोहन राय
(b) केशव चन्द्र सेन
(c) स्वामी दयानंद सरस्वती
(d) महादेव गोविन्द रानाडे

Ans. (d)

20. विष्णु प्रभाकर के अनुसार गांधी जी के आदेश पर महादेव देसाई ने शरतचन्द्र की किन रचनाओं का गुजराती में अनुवाद किया था?
A. विराजबहू
B. राम की सुमति
C. चरित्रहीन
D. मंझली दीदी
E. अभिमान
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A, B, C
(b) केवल A, B, D
(c) केवल A, C, E
(d) केवल B, C, D

Ans. (b)

21. 'कलम का सिपाही' जीवनी लिखने में जीवनीकार को निम्नलिखित में से किस स्त्रोत से मदद नहीं मिली?
(a) प्रेमचंद की डायरी से
(b) प्रेमचंद के पत्रों से
(c) पुस्तक-पत्रिकाओं में प्रकाशित संस्मरणों से
(d) मुंशी जी की सर्विस बुक से

Ans. (a)

22. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (आलोचक)	सूची-II (आलोचना ग्रन्थ)

PROFESSORS ADDA

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
According NET EXAM Pattern
ALL SYLLABUS COVERED
DETAILED ANSWER
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

UGC NET हिंदी साहित्य UNIT WISE ट्रेंड विश्लेषण

यह विश्लेषण UGC NET हिंदी साहित्य पाठ्यक्रम और UGC NET इतिहास PYQ विश्लेषण में दिए गए प्रश्न पैटर्न और संरचना पर आधारित है। यह हिंदी साहित्य के लिए संभावित प्रश्न प्रकारों और महत्वपूर्ण क्षेत्रों का एक अनुमानित ढाँचा प्रस्तुत करता है, ताकि आपको अपनी तैयारी की रणनीति बनाने में सहायता मिल सके।

1. प्रश्नों के प्रकारों में संतुलनः

इतिहास के PYQ विश्लेषण के समान, UGC NET हिंदी साहित्य की परीक्षा में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का संतुलन देखा जा सकता है। प्रमुख प्रश्न प्रकार इस प्रकार हैं:

- **तथ्यात्मक पहचानः** लेखकों, रचनाओं (कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध आदि), पात्रों, काव्य पंक्तियों, साहित्यिक सिद्धांतों, परिभाषाओं, पत्रिकाओं, साहित्यिक संस्थाओं और महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रकाशन वर्षों की सीधी पहचान पर आधारित प्रश्न। (उदाहरणः 'गोदान' उपन्यास के लेखक कौन हैं? 'कामायनी' में कितने सर्ग हैं? 'रस सिद्धांत' के प्रवर्तक कौन हैं?)

- **कालानुक्रमिक क्रम (Chronological Order):** हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों, साहित्यिक आंदोलनों, प्रमुख रचनाओं के प्रकाशन वर्ष, लेखकों के जन्म/मृत्यु वर्ष, महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के प्रकाशन क्रम, या साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना के क्रम को उनके घटित होने/प्रकाशन/निर्माण के क्रम में व्यवस्थित करने वाले प्रश्न। यह साहित्यिक इतिहास की गहरी समझ और तिथियों के ज्ञान का परीक्षण करता है।

- **मिलान (Matching):** लेखकों को उनकी रचनाओं से, रचनाओं को उनकी विधाओं से, पात्रों को संबंधित रचनाओं से, साहित्यिक सिद्धांतों को उनके प्रवर्तकों से, पत्रिकाओं को उनके संपादकों से, साहित्यिक आंदोलनों को उनकी प्रमुख प्रवृत्तियों से मिलाने वाले प्रश्न।

- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason):** किसी साहित्यिक कथन, विशिष्ट प्रवृत्ति, आलोचनात्मक व्याख्या या ऐतिहासिक घटना और उसके अंतर्निहित कारण/तर्क के बीच संबंध का मूल्यांकन करने वाले प्रश्न। (उदाहरणः अभिकथन (A): छायावाद व्यक्ति स्वातंत्र्य का काव्य है। कारण (R): इसमें व्यक्ति की भावनाओं और कल्पना को प्रमुखता दी गई है।)

- **स्रोत आधारित प्रश्नः** पाठ्यक्रम में निर्धारित विशिष्ट ग्रंथों (जैसे कविताएं, उपन्यासों के अंश, नाटकों के संवाद, निबंधों के वाक्य) या महत्वपूर्ण आलोचनात्मक उद्धरणों पर आधारित प्रश्न, जो मूल पाठ की समझ, व्याख्या, विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन का परीक्षण करते हैं।

PROFESSORS ADDA

- **अवधारणात्मक समझ:** हिंदी साहित्य और साहित्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं (जैसे रस, अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, दलित साहित्य, स्त्री विमर्श) की समझ का परीक्षण करने वाले प्रश्न।

- **बहु-विकल्पीय कथन (Multiple Correct Statements):** किसी लेखक, रचना, कालखंड, साहित्यिक सिद्धांत, आंदोलन या प्रवृत्ति के बारे में दिए गए कई कथनों में से सही या गलत कथनों के समूह की पहचान करने वाले प्रश्न। ये विस्तृत और सूक्ष्म ज्ञान का परीक्षण करते हैं।

- **अनुच्छेद आधारित प्रश्न (Passage-based Questions):** साहित्य के किसी अंश (कविता या गद्य) या किसी आलोचनात्मक/सैद्धांतिक लेख पर आधारित प्रश्न, जो पाठ की समझ, व्याख्या, विश्लेषण और आलोचनात्मक मूल्यांकन का परीक्षण करते हैं।

आगामी UGC NET / JRF परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

2. कठिनाई स्तर और कौशल परीक्षण:

परीक्षा में केवल तथ्यात्मक स्मरण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि साहित्यिक अवधारणाओं की गहरी समझ, निर्धारित ग्रंथों का विश्लेषण, विभिन्न साहित्यिक घटनाओं, प्रवृत्तियों और विचारधाराओं के बीच संबंध स्थापित करने और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता पर भी जोर दिया जाता है।

- कालानुक्रमिक और मिलान वाले प्रश्नों के लिए व्यापक और सटीक तथ्यात्मक ज्ञान आवश्यक है।
- अभिकथन-कारण और स्रोत-आधारित प्रश्न विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक कौशल की मांग करते हैं।
- साहित्यशास्त्र और वैचारिक पृष्ठभूमि संबंधी प्रश्न विभिन्न साहित्यिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों की समझ का परीक्षण करते हैं।

3. नवीनतम रुझान:

पिछले कुछ वर्षों के रुझानों के आधार पर, निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है:

- पाठ्यक्रम में शामिल विशिष्ट रचनाओं (इकाई V से X तक) से सीधे और गहरे प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इन रचनाओं का मूलपाठ पढ़ना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

UGC NET 50 DAY TARGETED PROGRAM

PAPER 1 BOTH MEDIUM

FEATURES

1. 150 TOPICS COVERED
2. DAILY 3 TOPICS STUDY PLAN
3. PRACTICE WITH MCQs + PDFs
4. WEEKLY MOCK TESTS
5. CONCEPT MIND MAPS
6. PERSONAL MENTORSHIP
7. DOUBT-SOLVING SUPPORT

PROFESSORS ADDA

BENEFITS

1. Easy language notes
2. No confusion
3. What to read & how to read
4. Consistency ensured
5. Practice + Clarity
6. Focus on only important topics

सभी Important टॉपिक्स पर फोकस

समय की बचत, तैयारी ज़बरदस्त ।

click here to join

+91 7690022111+91 9216228788

- साहित्यशास्त्र (इकाई III) और वैचारिक पृष्ठभूमि (इकाई IV) से अवधारणात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न अधिक पूछे जा रहे हैं, जो सिद्धांतों और विचारधाराओं की गहरी समझ पर आधारित होते हैं।
- समकालीन साहित्य और पाठ्यक्रम में शामिल अस्मितामूलक विमर्श (दलित साहित्य, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श) पर आधारित प्रश्नों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- हिंदी भाषा के विविध रूपों, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और संचार माध्यमों तथा कंप्यूटर में हिंदी के प्रयोग से संबंधित प्रश्न (इकाई I) भी महत्वपूर्ण हो रहे हैं।
- निर्धारित ग्रंथों से सीधे उद्धरण देकर उन पर आधारित स्रोत आधारित प्रश्नों की संख्या बढ़ रही है।

4. विषय-वस्तु फोकस और महत्व:

पाठ्यक्रम को 10 इकाइयों में विभाजित किया गया है, और प्रत्येक इकाई का अपना विशिष्ट महत्व और फोकस क्षेत्र है:

इकाई - I: हिंदी भाषा और उसका विकास

- **महत्व:** हिंदी भाषा की उत्पत्ति, विकास, संरचना और विभिन्न रूपों की मूलभूत समझ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण इकाई।
- **संभावित फोकस:** प्राचीन/मध्यकालीन आर्य भाषाओं से हिंदी का संबंध, अपभ्रंश और पुरानी हिंदी, आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण, हिंदी की उपभाषाएं और बोलियां (विशेषकर खड़ीबोली, ब्रज, अवधी की विशेषताएं), हिंदी के विविध रूप (उर्दू, दक्खिनी, हिंदुस्तानी), हिंदी का भाषिक स्वरूप (स्वनिम, शब्द, वाक्य रचना), मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, हिंदी की संवैधानिक स्थिति, देवनागरी लिपि।
- **संभावित प्रश्न प्रकार:** तथ्यात्मक (विशेषताएं, वर्गीकरण), मिलान (बोली-क्षेत्र), अवधारणात्मक (मानक भाषा, राजभाषा), बहु-कथनीय।

इकाई - II: हिंदी साहित्य का इतिहास

- **महत्व:** यह इकाई पूरे हिंदी साहित्य के इतिहास की नींव है और सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाइयों में से एक है।
- **संभावित फोकस:** हिंदी साहित्येतिहास दर्शन और लेखन पद्धतियां, काल-विभाजन और नामकरण, आदिकाल (प्रमुख प्रवृत्तियां, रासो साहित्य, जैन साहित्य, सिद्ध-नाथ साहित्य, अमीर खुसरो, विद्यापति), भक्तिकाल (उदय के कारण, संप्रदाय, प्रमुख कवि और उनका काव्य), रीतिकाल (प्रमुख प्रवृत्तियां, रीतिकवियों का आचार्यत्व, प्रमुख कवि), आधुनिक काल (गद्य का उद्भव-विकास, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद,

PROFESSORS ADDA

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब.
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं, बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है, जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन, **Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का "अमृत निचोड़" — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

🧠 लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

💡 कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

Bonus Insides

🎯 यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं, "सही पढ़ना" चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

हिंदी साहित्य

1. प्रश्न: 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (1929) नामक प्रसिद्ध और व्यवस्थित इतिहास ग्रंथ के लेखक कौन हैं, जिसे आज भी मानक माना जाता है?
   उत्तर: आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. प्रश्न: आदिकाल के किस कवि को 'हिन्दी का प्रथम कवि' माना जाता है, जिन्होंने 'दोहाकोश' की रचना की?
   उत्तर: सरहपा।
3. प्रश्न: 'पृथ्वीराज रासो' नामक महाकाव्य की रचना किसने की, जिसे हिन्दी का प्रथम महाकाव्य कहा जाता है?
   उत्तर: चन्दबरदाई।
4. प्रश्न: 'बीजक' किस संत कवि की रचनाओं का संग्रह है, जिसमें साखी, सबद और रमैनी शामिल हैं?
   उत्तर: कबीरदास।
5. प्रश्न: मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' महाकाव्य की रचना किस भाषा में की थी?
   उत्तर: अवधी।
6. प्रश्न: 'अष्टछाप' की स्थापना 1565 में किस आचार्य ने की थी, जिसमें कृष्ण-भक्ति के आठ कवि शामिल थे?
   उत्तर: विट्ठलनाथ।
7. प्रश्न: 'रामचरितमानस', जो कि अवधी भाषा में एक कालजयी कृति है, की रचना तुलसीदास ने किस वर्ष पूरी की?
   उत्तर: 1574 ई. (संवत् 1631)।
8. प्रश्न: रीतिकाल के किस कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है, जो अपनी रचना 'रामचंद्रिका' के लिए जाने जाते हैं?

उत्तर: केशवदास।

9. प्रश्न: 'बिहारी सतसई' नामक एकमात्र कृति से साहित्य में अमर हो जाने वाले रीतिकाल के कवि कौन हैं?

उत्तर: बिहारीलाल।

10. प्रश्न: आधुनिक हिन्दी गद्य का जनक किसे माना जाता है, जिन्होंने 'भारत दुर्दशा' (1875) जैसे नाटक लिखे?

उत्तर: भारतेंदु हरिश्चंद्र।

11. प्रश्न: किस पत्रिका के प्रकाशन (1900) के साथ आधुनिक हिन्दी कहानी का विकास जुड़ा है, जिसके संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी (1903 में बने) थे?

उत्तर: सरस्वती पत्रिका।

12. प्रश्न: अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित 'प्रियप्रवास' (1914) को खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसमें किस पात्र का वर्णन है?

उत्तर: कृष्ण।

13. प्रश्न: 'भारत-भारती' (1912) नामक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी काव्य-कृति के रचयिता कौन हैं, जिन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि मिली?

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त।

14. प्रश्न: छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में कौन-कौन शामिल हैं?

उत्तर: जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा।

15. प्रश्न: 'कामायनी' (1936), जो छायावाद का प्रतिनिधि महाकाव्य है, के रचयिता कौन हैं?

उत्तर: जयशंकर प्रसाद।

16. प्रश्न: किस कवयित्री को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है और उनकी किस कृति के लिए उन्हें 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

उत्तर: महादेवी वर्मा, 'यामा' के लिए।

17. प्रश्न: 'तार सप्तक' का संपादन किस वर्ष में अज्ञेय द्वारा किया गया, जिसने

'प्रयोगवाद' की शुरुआत की?

उत्तर: 1943.

18. प्रश्न: प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना किस वर्ष लखनऊ में हुई, जिसके प्रथम अध्यक्ष मुंशी प्रेमचंद थे?

उत्तर: 1936.

19. प्रश्न: 'गोदान', जिसे कृषक जीवन का महाकाव्य कहा जाता है, मुंशी प्रेमचंद द्वारा किस वर्ष प्रकाशित किया गया?

उत्तर: 1936.

20. प्रश्न: 'चिंतामणि' नामक प्रसिद्ध निबंध संग्रह के लेखक कौन हैं?

उत्तर: आचार्य रामचंद्र शुक्ल।

21. प्रश्न: 'कफन' (1936), जो यथार्थवादी कहानी-कला का उत्कृष्ट उदाहरण है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: मुंशी प्रेमचंद।

22. प्रश्न: 'मैला आँचल' (1954), जिसे हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: फणीश्वरनाथ 'रेणु'।

23. प्रश्न: 'आषाढ़ का एक दिन' (1958) नामक प्रसिद्ध नाटक, जो कालिदास के जीवन पर आधारित है, किसने लिखा?

उत्तर: मोहन राकेश।

24. प्रश्न: 'अंधा युग' (1954), महाभारत युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित एक गीतिनाट्य, के रचयिता कौन हैं?

उत्तर: धर्मवीर भारती।

25. प्रश्न: 'साधारणीकरण' का सिद्धांत, जो रस निष्पत्ति की प्रक्रिया से संबंधित है, किस भारतीय काव्यशास्त्री ने दिया?

उत्तर: भट्टनायक।

26. प्रश्न: 'वक्रोक्ति सिद्धांत' के प्रवर्तक आचार्य कौन हैं?

उत्तर: आचार्य कुंतक।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

27. प्रश्न: किस आलोचक ने 'कविता के नए प्रतिमान' (1968) नामक पुस्तक लिखी, जिसने नई कविता के मूल्यांकन का आधार प्रस्तुत किया?

उत्तर: डॉ. नामवर सिंह।

28. प्रश्न: 'अज्ञेय' द्वारा रचित उपन्यास 'शेखर: एक जीवनी' (भाग-1, 1941) किस मनोवैज्ञानिक सिद्धांत से प्रभावित है?

उत्तर: मनोविश्लेषणवाद।

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

29. प्रश्न: गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की प्रसिद्ध लंबी कविता का क्या नाम है, जो आधुनिक जीवन की जटिलताओं को दर्शाती है?

उत्तर: 'अँधेरे में'।

30. प्रश्न: "अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन। अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन।।" यह काव्य-सिद्धान्त किसका है?

उत्तर: देव।

31. प्रश्न: हिन्दी में 'रिपोर्ताज' विधा का जनक किसे माना जाता है?

उत्तर: शिवदान सिंह चौहान।

32. प्रश्न: 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस साहित्यकार की आत्मकथा का पहला खंड है, जो 1969 में प्रकाशित हुआ?

उत्तर: हरिवंशराय बच्चन।

33. प्रश्न: 'झूठा सच' उपन्यास, जो भारत-विभाजन की त्रासदी पर आधारित है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: यशपाल।

34. प्रश्न: 'साकेत' महाकाव्य के केंद्र में कौन सा उपेक्षित नारी पात्र है?

उत्तर: उर्मिला।

35. प्रश्न: 'ध्वनि सिद्धांत' के प्रवर्तक आचार्य कौन हैं, जिन्होंने 'ध्वन्यालोक' ग्रंथ लिखा?

उत्तर: आनंदवर्धन।

36. प्रश्न: किस कहानी को हिन्दी की पहली कहानी माना जाता है, जिसके लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं?

उत्तर: 'इंदुमती' (1900)।

37. प्रश्न: रामधारी सिंह 'दिनकर' को उनकी किस कृति के लिए 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

उत्तर: 'उर्वशी'।

38. प्रश्न: हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (1946) किस विधा की रचना है?

उत्तर: उपन्यास।

39. प्रश्न: 'अस्तित्ववाद' नामक दार्शनिक अवधारणा से प्रभावित हिन्दी साहित्यकार कौन हैं?

उत्तर: अज्ञेय।

40. प्रश्न: 'संसद से सड़क तक' (1972) नामक प्रसिद्ध काव्य संग्रह के रचयिता कौन हैं?

उत्तर: धूमिल।

41. प्रश्न: 'रसगंगाधर' नामक काव्यशास्त्रीय ग्रंथ की रचना किसने की?

उत्तर: पंडितराज जगन्नाथ।

42. प्रश्न: 'आपका बंटी' (1971) उपन्यास, जो तलाकशुदा दंपत्ति के बच्चे की

मनोवैज्ञानिक पीड़ा पर केंद्रित है, की लेखिका कौन हैं?

उत्तर: मन्नू भंडारी।

43. प्रश्न: 'नई समीक्षा' (New Criticism) के सिद्धांत को हिन्दी में लाने का श्रेय किस आलोचक को दिया जाता है?

उत्तर: विजयदेवनारायण साही।

44. प्रश्न: फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता की स्थापना किस वर्ष हुई, जिसने खड़ी बोली गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

उत्तर: 1800.

45. प्रश्न: 'नागरी प्रचारिणी सभा', काशी की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

उत्तर: 1893.

46. प्रश्न: 'परिमल' किस साहित्यिक संस्था का नाम था, जिसके सदस्य निराला, प्रसाद जैसे छायावादी कवि थे?

उत्तर: इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था।

47. प्रश्न: 'बिम्बवाद' का सिद्धांत किससे संबंधित है, जिसने कविता में इंद्रिय-बोधगम्य चित्रों पर बल दिया?

उत्तर: टी. ई. ह्यूम और एजरा पाउंड।

48. प्रश्न: 'राग दरबारी' (1968) नामक व्यंग्य उपन्यास, जो ग्रामीण राजनीति और व्यवस्था पर कटाक्ष करता है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: श्रीलाल शुक्ल।

49. प्रश्न: 'मार्क्सवाद' से प्रभावित हिन्दी साहित्य की काव्य-धारा को क्या कहा जाता है?

उत्तर: प्रगतिवाद।

50. प्रश्न: 'भाषा योगवाशिष्ठ' (1741), जिसे खड़ी बोली गद्य की पहली परिमार्जित रचना माना जाता है, के लेखक कौन हैं?

उत्तर: रामप्रसाद निरंजनी।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PAID STUDENTS BENEFITS

- ✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
- ✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
- ✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
- ✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.

Click here to join

Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✅ **Core Concepts** – हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✅ **Key Thinkers & Theories** – नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✅ **Important Books** – वही किताबें, जो **exams** मे आती **year** सहित
- ✅ **Flow Charts** – हर जटिल टॉपिक को **1** पेज में समझो
- ✅ **Mind Maps** – तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और "Smart Study का असली formula"

🧠क्यों महत्वपूर्ण है

विषय की नींव और आधार होते है विचारक और **concepts.** हर बार जरूर सवाल बनते है **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📢 Topper बनना है? Toolkit है जवाब!

📦 Format: Digital PDF + Optional Print
📅 Latest Update: May 2025 तक

🚀 टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?

- **No Guesswork** – सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning** = तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

हिंदी Thinker Tool Kit Smaple

1. भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850-1885)

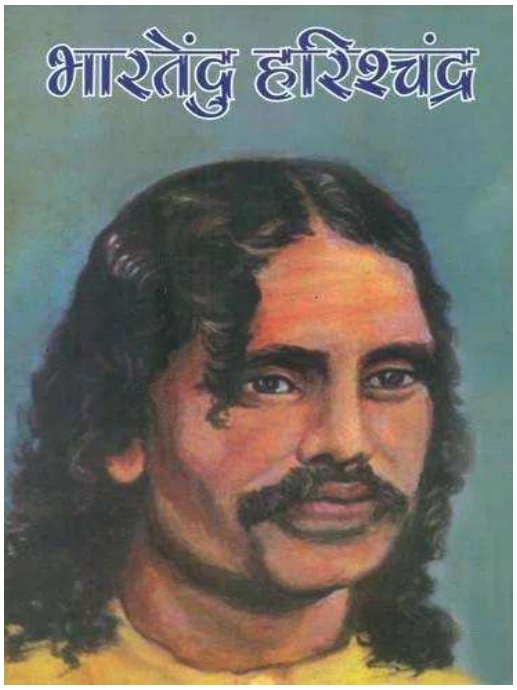

परिचय

- उन्हें "आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक" माना जाता है।
- वे आधुनिक भारत के पहले और सबसे प्रभावशाली लेखकों में से एक थे जिन्होंने हिन्दी भाषा को एक नया रूप दिया।
- उन्होंने गद्य के लिए खड़ी बोली को अपनाया और पद्य के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग जारी रखा, इस प्रकार उन्होंने एक सेतु का काम किया।
- उनका लेखन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सुधारों की भावना से ओत-प्रोत था।
- उन्होंने नाटक, कविता, निबंध जैसी अनेक विधाओं में लेखन किया और पत्रकारिता के माध्यम से भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **खड़ी बोली गद्य का मानकीकरण:** उन्होंने हिन्दी गद्य को एक सरल, सुगम और व्यावहारिक रूप प्रदान किया, जिससे वह आम जनता के लिए सुलभ हो सकी [5]।
- **"निज भाषा उन्नति":** उन्होंने "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" का नारा दिया, जिससे स्वभाषा के प्रति प्रेम और गौरव की भावना का संचार हुआ [6]।
- **सामाजिक चेतना:** उन्होंने अपने नाटकों, जैसे 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर गहरा व्यंग्य किया।
- **पत्रकारिता:** उन्होंने 'कवि वचन सुधा' (1868) और 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (1873) जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया, जो हिन्दी पत्रकारिता के विकास में मील का पत्थर साबित हुईं [7]।
- **आधुनिक विधाओं का विकास:** उन्होंने हिन्दी में निबंध, नाटक, और आलोचना जैसी आधुनिक साहित्यिक विधाओं की नींव रखी [8]।
- **भारतेन्दु मंडल:** उन्होंने अपने समय के लेखकों का एक समूह (मंडल) तैयार किया, जिसने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में सामूहिक योगदान दिया।
- **काव्य में ब्रजभाषा:** जबकि उन्होंने गद्य के लिए खड़ी बोली को बढ़ावा दिया, काव्य रचना के लिए वे परंपरागत रूप से ब्रजभाषा का ही प्रयोग करते रहे [9]।
- **अनुवाद कार्य:** उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी के कई ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी के भंडार को समृद्ध किया [10]।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- **भारत दुर्दशा (1875):** यह एक मौलिक नाटक है जिसमें भारत की तत्कालीन दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है।
- **अंधेर नगरी (1881):** यह एक प्रहसन (व्यंग्यात्मक नाटक) है जो भ्रष्ट शासन व्यवस्था पर तीखा प्रहार

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

करता है।

- **कवि वचन सुधा (1868):** उनके द्वारा संपादित यह पत्रिका सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक चेतना के प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम थी [11]।
- **हरिश्चंद्र मैगजीन (1873):** इस पत्रिका ने हिन्दी गद्य के एक परिष्कृत रूप को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई [12]।

रोचक तथ्य

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र का जीवनकाल मात्र 34 वर्ष का था, लेकिन इतने कम समय में ही उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में इतना अभूतपूर्व योगदान दिया कि उनके युग को "भारतेन्दु युग" के नाम से जाना जाता है ।

2. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938)

परिचय

- वे हिन्दी साहित्य के "द्विवेदी युग" के प्रवर्तक हैं, जो उन्हीं के नाम पर रखा गया।
- 1903 से 1920 तक 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक के रूप में उन्होंने हिन्दी भाषा के मानकीकरण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।
- वे एक भाषा-सुधारक, आलोचक, निबंधकार और अनुवादक थे।
- उन्होंने लेखकों की एक पूरी पीढ़ी को व्याकरण सम्मत और परिमार्जित भाषा लिखने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित किया।
- उनका मुख्य उद्देश्य हिन्दी गद्य को व्यवस्थित करना और उसे ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति के लिए एक समर्थ माध्यम बनाना था।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **भाषा का मानकीकरण:** उन्होंने 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी व्याकरण, वर्तनी (spelling) और वाक्य-विन्यास को स्थिर और मानकीकृत करने का सबसे बड़ा कार्य किया।
- **खड़ी बोली का परिष्कार:** उन्होंने कवियों को ब्रजभाषा छोड़कर खड़ी बोली में कविता लिखने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे आधुनिक हिन्दी कविता का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- **लेखकों के मार्गदर्शक:** वे लेखकों की व्याकरण संबंधी त्रुटियों को सुधारकर उनकी रचनाओं को 'सरस्वती' में प्रकाशित करते थे, जिससे यह पत्रिका एक साहित्यिक पाठशाला बन गई।
- **ज्ञानवर्धक साहित्य:** उन्होंने ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर निबंध लिखने और लिखवाने पर जोर दिया ताकि हिन्दी का ज्ञान भंडार समृद्ध हो।
- **आलोचना का विकास:** उन्होंने उपयोगितावादी और सुधारवादी आलोचना को बढ़ावा दिया और पुस्तकों की समीक्षा के माध्यम से आलोचना के मानदंडों को स्थापित किया।
- **अनुवाद कार्य:** उन्होंने कालिदास की रचनाओं और बेकन के निबंधों का हिन्दी में अनुवाद कर भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाया।
- **"कवि कर्तव्य":** उन्होंने कवियों को उनके कर्तव्यों के बारे में सचेत किया और उन्हें मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक उपयोगिता पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।
- **सरल और शुद्ध भाषा:** उन्होंने आडंबरपूर्ण और कठिन भाषा के स्थान पर सरल, शुद्ध और सुव्यवस्थित

भाषा के प्रयोग पर बल दिया।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- **सरस्वती पत्रिका (संपादक: 1903-1920):** उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान किसी एक पुस्तक के बजाय इस पत्रिका का संपादन है, जिसने एक युग का निर्माण किया।
- **रसज्ञ रंजन (1920):** यह उनके आलोचनात्मक और ज्ञानवर्धक निबंधों का संग्रह है।
- **संपत्ति-शास्त्र (1908):** अर्थशास्त्र पर लिखी गई यह हिन्दी की शुरुआती महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक है।
- **कालिदास की निरंकुशता**: इस आलोचनात्मक कृति में उन्होंने प्रसिद्ध कवि कालिदास की कुछ त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित किया, जो उनकी निर्भीक आलोचना दृष्टि का प्रमाण है।

रोचक तथ्य

- 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन संभालने से पहले आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भारतीय रेलवे में एक टेलीग्राफ अधिकारी के रूप में कार्यरत थे, लेकिन हिन्दी भाषा की सेवा के लिए उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी।

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941)

परिचय

- उन्हें हिन्दी साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण और इतिहासकार और आलोचक माना जाता है।
- उनके द्वारा लिखा गया 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' आज भी सबसे प्रामाणिक और मानक ग्रंथ माना जाता है।
- उन्होंने हिन्दी आलोचना को एक वैज्ञानिक और व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया।
- वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी रहे।
- उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक और विश्लेषणपरक था, जिसने हिन्दी साहित्य के अध्ययन को एक नई दिशा दी।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **साहित्येतिहास का काल-विभाजन:** उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में विभाजित किया, जिसे आज भी व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।
- **विधेयवादी पद्धति:** उन्होंने साहित्य के इतिहास को तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों (युगीन प्रवृत्तियों) से जोड़कर देखने की विधेयवादी पद्धति अपनाई।
- **लोक मंगल की भावना:** उन्होंने तुलसीदास को सर्वश्रेष्ठ कवि मानते हुए साहित्य का मूल्यांकन 'लोक मंगल' की कसौटी पर किया। उनके अनुसार, वही साहित्य श्रेष्ठ है जो लोक कल्याण की भावना से युक्त हो।
- **रस मीमांसा:** उन्होंने भारतीय काव्यशास्त्र के 'रस' सिद्धांत की मनोवैज्ञानिक और आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत की।
- **चिंतामणि:** उनके निबंध संग्रह 'चिंतामणि' के निबंध (जैसे- क्रोध, श्रद्धा-भक्ति) मनोविकारों के विश्लेषण के लिए अद्वितीय माने जाते हैं।
- **भक्तिकाल का विश्लेषण:** उन्होंने भक्तिकाल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग' कहा और निर्गुण तथा

सगुण काव्यधाराओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया।

- **रीतिकाल का नामकरण:** उन्होंने शृंगारिक प्रवृत्तियों की प्रधानता के कारण उत्तर मध्यकाल को 'रीतिकाल' नाम दिया।
- **आलोचना के मानदंड:** उन्होंने तुलनात्मक, मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक आलोचना पद्धतियों का समन्वय कर हिन्दी आलोचना के गंभीर मानदंडों की स्थापना की।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- **हिन्दी साहित्य का इतिहास (1929):** यह उनका सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसने हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन को एक सुव्यवस्थित आधार प्रदान किया।
- **चिंतामणि (भाग 1: 1939):** यह उनके मनोवैज्ञानिक और विचारात्मक निबंधों का प्रसिद्ध संग्रह है, जिसके लिए उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' मिला।
- **रस मीमांसा (1949, मरणोपरांत प्रकाशित):** इस ग्रंथ में उन्होंने रस सिद्धांत की विस्तृत सैद्धांतिक विवेचना की है।

रोचक तथ्य

- उनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' मूल रूप से 'हिन्दी शब्दसागर' नामक शब्दकोश की भूमिका के रूप में लिखा गया था, जो बाद में एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित होकर मील का पत्थर बन गया।

4. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1851-1941)

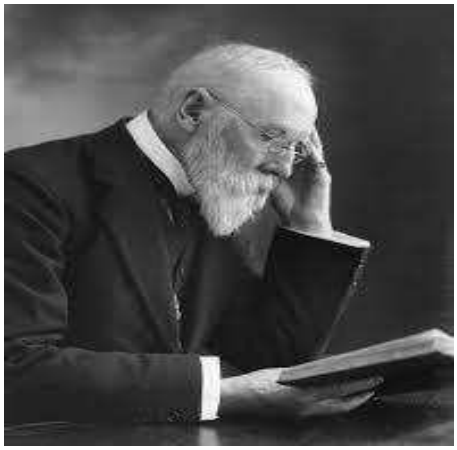

परिचय

- वे एक आयरिश भाषाविद् और ब्रिटिश भारत में एक सिविल सेवक थे।
- उन्हें भारत के भाषाई सर्वेक्षण के लिए जाना जाता है, जो अपने आप में एक monumental कार्य था।
- उनका कार्य, 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' (Linguistic Survey of India), भारतीय भाषाओं और बोलियों के अध्ययन के लिए एक आधार ग्रंथ है।
- उन्होंने पहली बार भारतीय भाषाओं का वैज्ञानिक वर्गीकरण और मानचित्रण किया।
- हिन्दी भाषा और उसकी बोलियों के क्षेत्र निर्धारण में उनका काम अभूतपूर्व था।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (LSI): यह उनका सबसे बड़ा योगदान है। इस सर्वेक्षण में भारत की 179 भाषाओं और 544 बोलियों का विस्तृत वर्णन है।
- **भाषाओं का वर्गीकरण:** उन्होंने भारतीय भाषाओं को इंडो-आर्यन, द्रविड़ियन जैसे भाषा-परिवारों में वर्गीकृत किया, जो आज भी भाषा विज्ञान में उपयोग होता है।
- **हिन्दी क्षेत्र का निर्धारण:** उन्होंने हिन्दी की बोलियों को 'पश्चिमी हिन्दी' और 'पूर्वी हिन्दी' जैसे समूहों में विभाजित किया। यह विभाजन आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

- **बोलियों का दस्तावेजीकरण:** उन्होंने पहली बार ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली जैसी बोलियों का व्यवस्थित व्याकरणिक सर्वेक्षण और नमूने प्रस्तुत किए।
- **"इंडो-आर्यन" शब्द का प्रयोग:** उन्होंने भारतीय-आर्य भाषाओं के समूह के लिए इस शब्द को लोकप्रिय बनाया।
- **भक्ति साहित्य का अध्ययन:** भाषा सर्वेक्षण के अलावा, उन्होंने तुलसीदास और मैथिल कवि विद्यापति पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया।
- **तुलनात्मक व्याकरण:** उन्होंने विभिन्न बोलियों के बीच व्याकरणिक समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया।
- **मानचित्रण:** उन्होंने भाषा और बोलियों के भौगोलिक प्रसार को दर्शाने वाले मानचित्र तैयार किए, जो भाषा भूगोल के क्षेत्र में एक नई शुरुआत थी।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- **लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (Linguistic Survey of India) (1903-1928 के बीच कई खंडों में प्रकाशित):** यह भारतीय भाषाओं पर किया गया अब तक का सबसे व्यापक सर्वेक्षण है।
- **बिहारी भाषा की बोलियों और उपबोलियों के सात व्याकरण (Seven Grammars of the Dialects and Subdialects of the Bihari Language) (1883-1887):** इस कार्य में उन्होंने बिहारी बोलियों (भोजपुरी, मगही, मैथिली) का गहन विश्लेषण किया।

रोचक तथ्य

- जॉर्ज ग्रियर्सन ने इतना बड़ा भाषाई सर्वेक्षण काफी हद तक भारत में अपने कार्यालय में बैठकर ही पूरा किया। उन्होंने पूरे भारत में फैले सरकारी अधिकारियों, मिशनरियों और विद्वानों के एक नेटवर्क के माध्यम से डेटा एकत्र करवाया, बिना स्वयं बहुत अधिक फील्डवर्क किए।

5. धीरेंद्र वर्मा (1897-1973)

परिचय

- वे भारत के एक प्रमुख भाषाविद्, साहित्यकार और शिक्षाविद् थे।
- उन्होंने हिन्दी भाषा और उसकी बोलियों, विशेषकर ब्रजभाषा पर वैज्ञानिक पद्धति से महत्वपूर्ण कार्य किया।
- उन्होंने पेरिस में प्रसिद्ध भाषाविद् जूल्स ब्लॉक के निर्देशन में भाषा विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।
- प्रयाग विश्वविद्यालय (अब इलाहाबाद विश्वविद्यालय) में हिन्दी विभाग की स्थापना में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- उन्होंने हिन्दी के अध्ययन को एक वैज्ञानिक और अनुशासित स्वरूप प्रदान किया।

प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **वैज्ञानिक पद्धति:** उन्होंने हिन्दी भाषा और बोलियों के अध्ययन में वर्णनात्मक और ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की वैज्ञानिक पद्धतियों को लागू किया।
- **ब्रजभाषा का अध्ययन:** उनका ग्रंथ 'ब्रजभाषा व्याकरण' इस बोली का पहला वैज्ञानिक और विस्तृत व्याकरण माना जाता है।
- **हिन्दी का ऐतिहासिक विकास:** उन्होंने अपभ्रंश से लेकर आधुनिक हिन्दी तक के विकास क्रम का व्यवस्थित और प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया।
- **हिन्दी क्षेत्र का वर्गीकरण:** उन्होंने ग्रियर्सन के वर्गीकरण को संशोधित करते हुए हिन्दी क्षेत्र को पांच उपभाषाओं (पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी) और उनकी 17 बोलियों में विभाजित किया, जो आज भी मानक माना जाता है।
- **हिन्दी कोश निर्माण:** उन्होंने 'हिन्दी शब्दसागर' के संपादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 'हिन्दी साहित्य कोश' का संपादन भी किया।
- **देवनागरी लिपि में सुधार:** वे देवनागरी लिपि में सुधार के पक्षधर थे और उन्होंने इस दिशा में कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए।
- **सांस्कृतिक पृष्ठभूमि:** उन्होंने भाषा के अध्ययन को उसकी सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से जोड़ने पर बल दिया।
- **मानक हिन्दी:** उन्होंने मानक हिन्दी के स्वरूप निर्धारण और उसके प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन

- **हिन्दी भाषा का इतिहास (1933):** यह पुस्तक हिन्दी के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
- **ब्रजभाषा व्याकरण (1937):** यह उनके शोध कार्य पर आधारित है और ब्रजभाषा का एक मानक व्याकरण प्रस्तुत करता है।
- **ग्रामीण हिन्दी**: इस पुस्तक में उन्होंने हिन्दी की ग्रामीण बोलियों और उनके स्वरूप का विश्लेषण किया है।
- **हिन्दी साहित्य कोश (संपादक):** यह हिन्दी साहित्य के पारिभाषिक शब्दों और अवधारणाओं का एक व्यापक कोश है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

रोचक तथ्य

- डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने पेरिस में अपना शोध प्रबंध (thesis) फ्रेंच भाषा में लिखा था, जिसका शीर्षक था "Le Patois Braj"। बाद में इसी का संशोधित और परिवर्धित रूप 'ब्रजभाषा व्याकरण' के नाम से प्रकाशित हुआ।

1. भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850–1885)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	हिंदी नाटक और आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाते हैं।
मुख्य अवधारणाएँ	- नवजागरण चेतना - राष्ट्रभक्ति - यथार्थवाद
प्रमुख कृतियाँ	- अंधेर नगरी (1871) - भारत दुर्दशा - वैदिक हिंसा हिंसा न भवति
विशेष तथ्य	- हिंदी गद्य और पत्रकारिता के आधुनिक युग का प्रारंभ उन्हीं से माना जाता है।

2. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864–1938)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	हिंदी साहित्य में 'द्विवेदी युग' के प्रवर्तक; भाषा, व्याकरण और शैली को परिष्कृत किया।
मुख्य अवधारणाएँ	- शुद्ध भाषा आंदोलन - सामाजिक चेतना - भाषा का संस्कार
प्रमुख कृतियाँ	- कविकरम - साहित्य का उद्देश्य - रीति और नीति
विशेष तथ्य	- 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक रहे, जिससे कई लेखकों का उत्थान हुआ।

3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1884–1941)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	हिंदी आलोचना के प्रवर्तक और 'तथ्य आधारित आलोचना' के समर्थक।
मुख्य अवधारणाएँ	- आलोचना का वैज्ञानिक दृष्टिकोण - लोकमंगल की दृष्टि - ऐतिहासिक क्रमबद्धता
प्रमुख कृतियाँ	- हिंदी साहित्य का इतिहास (1937) - तुलसीदास - कविता क्या है
विशेष तथ्य	- आलोचना को एक अनुशासित विद्या के रूप में स्थापित किया।

4. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1851–1941)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	अंग्रेज भाषाविद् जिन्होंने भारत की भाषाओं का सर्वेक्षण किया।
मुख्य अवधारणाएँ	- भाषाई वर्गीकरण - बोली और भाषा का अंतर - भाषिक सर्वेक्षण
प्रमुख कृतियाँ	- Linguistic Survey of India (1894–1928)
विशेष तथ्य	- 179 भाषाओं और 544 बोलियों का दस्तावेजीकरण किया।

5. धीरेंद्र वर्मा (1897–1973)

श्रेणी	विवरण
संक्षिप्त परिचय	हिंदी भाषा और साहित्य के विद्वान; ऐतिहासिक व्याकरण और कोश निर्माण में योगदान।
मुख्य अवधारणाएँ	- हिंदी की उत्पत्ति और विकास - व्याकरणिक अध्ययन - शब्दकोश निर्माण
प्रमुख कृतियाँ	- हिंदी भाषा का इतिहास (1933) - अवहट्ठ और अपभ्रंश
विशेष तथ्य	- प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

हिन्दी Important Books & Table

1. **पृथ्वीराज रासो** (आदिकाल) - **चंदबरदाई**: हिन्दी का पहला महाकाव्य माना जाता है, जिसमें पृथ्वीराज चौहान के शौर्य और वीरता का वर्णन है।
2. **बीजक** (भक्तिकाल) - **कबीरदास**: कबीर की वाणियों का संग्रह, जिसमें साखी, सबद और रमैनी शामिल हैं। यह निर्गुण भक्ति और सामाजिक पाखंड पर प्रहार का प्रतीक है।
3. **पद्मावत** (भक्तिकाल) - **मलिक मुहम्मद जायसी**: एक प्रसिद्ध प्रेमाख्यानक महाकाव्य, जो सूफी परंपरा में लिखा गया है और जिसमें रतनसेन और पद्मावती की प्रेम कथा है।
4. **सूरसागर** (भक्तिकाल) - **सूरदास**: कृष्ण भक्ति का यह श्रेष्ठतम काव्य है, जिसमें सूरदास ने कृष्ण की बाल लीलाओं और श्रृंगारिक वर्णन किया है।
5. **रामचरितमानस** (भक्तिकाल) - **गोस्वामी तुलसीदास**: अवधी भाषा में रचित यह महाकाव्य हिन्दू धर्म का एक पवित्र ग्रंथ है और राम के जीवन चरित्र पर आधारित है।
6. **बिहारी सतसई** (रीतिकाल) - **बिहारीलाल**: रीतिकाल का एक उत्कृष्ट काव्य, जिसमें 713 दोहे हैं और जो श्रृंगार, नीति और भक्ति का अद्भुत मिश्रण है।
7. **अंधेर नगरी** (आधुनिक काल) - **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**: एक प्रसिद्ध नाटक जो तत्कालीन ब्रिटिश शासन की अव्यवस्था और मूर्खता पर व्यंग्य करता है।
8. **भारत-भारती** (आधुनिक काल) - **मैथिलीशरण गुप्त**: राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत यह काव्य कृति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुत लोकप्रिय हुई।
9. **कामायनी** (आधुनिक काल) - **जयशंकर प्रसाद**: छायावाद का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य, जिसमें मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव चेतना के विकास की कथा कही गई है।
10. **राम की शक्ति पूजा** (आधुनिक काल) - **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**: एक लंबी और ओजस्वी कविता, जो राम के अंतर्द्वंद्व और शक्ति की आराधना का वर्णन करती है।
11. **चिदंबरा** (आधुनिक काल) - **सुमित्रानंदन पंत**: इस काव्य संग्रह के लिए पंत जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। इसमें उनकी मानवतावादी और दार्शनिक कविताएँ संग्रहीत हैं।
12. **यामा** (आधुनिक काल) - **महादेवी वर्मा**: इस काव्य संग्रह के लिए महादेवी जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। यह उनकी रहस्य और वेदना की भावनाओं को व्यक्त करता है।
13. **गोदान** (आधुनिक काल) - **प्रेमचंद**: हिन्दी उपन्यास का मील का पत्थर, जो भारतीय किसान के जीवन की त्रासदी और महाजनी सभ्यता के शोषण को दर्शाता है।
14. **मैला आँचल** (आधुनिक काल) - **फणीश्वरनाथ 'रेणु'**: हिन्दी का पहला और सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास, जो बिहार के एक पिछड़े गाँव के जीवन का यथार्थ चित्रण करता है।
15. **झूठा सच** (आधुनिक काल) - **यशपाल**: भारत विभाजन की त्रासदी पर लिखा गया एक वृहत् और यथार्थवादी उपन्यास।
16. **शेखर: एक जीवनी** (आधुनिक काल) - **अज्ञेय**: एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास जो नायक के विद्रोही चरित्र और उसके आत्म-संघर्ष को प्रस्तुत करता है।
17. **बाणभट्ट की आत्मकथा** (आधुनिक काल) - **हजारी प्रसाद द्विवेदी**: एक ऐतिहासिक उपन्यास जो बाणभट्ट के जीवन के माध्यम से प्राचीन भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन को दर्शाता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

18. **राग दरबारी** (आधुनिक काल) - **श्रीलाल शुक्ल**: स्वातंत्र्योत्तर भारत में ग्रामीण जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार और राजनीति पर एक तीखा व्यंग्य।
19. **चिंतामणि** (आधुनिक काल) - **आचार्य रामचंद्र शुक्ल**: हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबंधों का संग्रह, जिसमें भाव और मनोविकार संबंधी निबंध हैं। यह आलोचना का भी एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
20. **अशोक के फूल** (आधुनिक काल) - **हजारी प्रसाद द्विवेदी**: ललित निबंधों का संग्रह, जो संस्कृति, इतिहास और परंपरा की गहरी समझ को दर्शाता है।
21. **आषाढ़ का एक दिन** (आधुनिक काल) - **मोहन राकेश**: एक प्रसिद्ध नाटक जो महाकवि कालिदास के जीवन और उनके अंतर्द्वंद्व पर आधारित है।
22. **संस्कृति के चार अध्याय** (आधुनिक काल) - **रामधारी सिंह 'दिनकर'**: भारत की सांस्कृतिक विविधता और उसके ऐतिहासिक विकास पर एक महत्वपूर्ण गद्य रचना।
23. **तार सप्तक** (1943) - **संपादक**: अज्ञेय: इसने हिन्दी कविता में 'प्रयोगवाद' की शुरुआत की, जिसमें सात कवियों की कविताएँ संग्रहीत थीं।
24. **अंधा युग** (आधुनिक काल) - **धर्मवीर भारती**: महाभारत युद्ध के अंतिम दिन पर आधारित एक गीतिनाट्य, जो युद्ध की विभीषिका और मानवीय मूल्यों के पतन को दर्शाता है।
25. **क्या भूलूँ क्या याद करूँ** (आधुनिक काल) - **हरिवंश राय 'बच्चन'**: बच्चन जी की चार खंडों की आत्मकथा का पहला और सबसे प्रसिद्ध भाग।
26. **आपका बंटी** (आधुनिक काल) - **मन्नू भंडारी**: माता-पिता के तलाक के कारण एक बच्चे के टूटे हुए बचपन की कहानी पर आधारित एक संवेदनशील उपन्यास।
27. **तमस** (आधुनिक काल) - **भीष्म साहनी**: भारत विभाजन के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगों पर आधारित एक मार्मिक उपन्यास।
28. **कितनी नावों में कितनी बार** (आधुनिक काल) - **अज्ञेय**: इस काव्य संग्रह के लिए अज्ञेय को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
29. **अंधेरे में** (आधुनिक काल) - **गजानन माधव 'मुक्तिबोध'**: एक लंबी, जटिल और फैंटेसी शैली की कविता, जो समकालीन जीवन के संकट और आत्म-संघर्ष को व्यक्त करती है।
30. **कविता के नये प्रतिमान** (आधुनिक काल) - **नामवर सिंह**: नई कविता के सौंदर्यशास्त्र और उसके मूल्यांकन के मानदंडों पर एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृति।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

1: भारतीय आर्य भाषाओं का ऐतिहासिक वर्गीकरण

काल	समय-सीमा (लगभग)	भाषा / रूप	मुख्य विशेषताएँ
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा	1500 ई.पू. – 500 ई.पू.	वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत	योगात्मक भाषा, समृद्ध शब्द-भंडार, श्लिष्ट रूप। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत की रचना।
मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा	500 ई.पू. – 1000 ई.	पालि, प्राकृत, अपभ्रंश	वियोगात्मकता की ओर झुकाव, सरलीकरण की प्रवृत्ति। बौद्ध एवं जैन साहित्य की रचना।
आधुनिक भारतीय आर्यभाषा	1000 ई. – अब तक	हिन्दी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि।	पूर्ण वियोगात्मकता, क्षेत्रीय भाषाओं का विकास।

2: अपभ्रंश के भेद और उनसे विकसित आधुनिक भाषाएँ/उपभाषाएँ

अपभ्रंश का भेद	विकसित आधुनिक भारतीय भाषा / उपभाषा
शौरसेनी अपभ्रंश	पश्चिमी हिन्दी (खड़ी बोली, ब्रज, हरियाणवी, बुन्देली, कन्नौजी), राजस्थानी, गुजराती
पैशाची अपभ्रंश	लहँदा, पंजाबी
ब्राचड़ अपभ्रंश	सिन्धी
खस अपभ्रंश	पहाड़ी हिन्दी (कुमाऊँनी, गढ़वाली)
महाराष्ट्री अपभ्रंश	मराठी
अर्धमागधी अपभ्रंश	पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)
मागधी अपभ्रंश	बिहारी (भोजपुरी, मगही, मैथिली), बांग्ला, उड़िया, असमिया

3: हिन्दी की उपभाषाएँ और प्रमुख बोलियाँ

उपभाषा	प्रमुख बोलियाँ	मुख्य क्षेत्र
पश्चिमी हिन्दी	खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, हरियाणवी (बाँगरू), बुन्देली, कन्नौजी	हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली
पूर्वी हिन्दी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी	मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश
राजस्थानी	मारवाड़ी (पश्चिमी), जयपुरी/ढूँढाड़ी (पूर्वी), मेवाती (उत्तरी), मालवी (दक्षिणी)	राजस्थान
पहाड़ी	कुमाऊँनी, गढ़वाली	उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश
बिहारी	भोजपुरी, मगही, मैथिली	बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

4: देवनागरी लिपि: विशेषताएँ और मानकीकरण

विशेषता / पहलू	विवरण
वैज्ञानिकता	यह एक ध्वन्यात्मक (Phonetic) लिपि है; जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित चिह्न है।
अक्षरात्मक लिपि	यह वर्णमाला आधारित (Alphabetical) न होकर अक्षरात्मक (Syllabic) है, जहाँ व्यंजन में स्वर अंतर्निहित होता है (जैसे 'क' = क् + अ)।
व्यापकता	यह संस्कृत, हिन्दी, मराठी, नेपाली, कोंकणी सहित कई भारतीय भाषाओं की लिपि है।
मानकीकरण के प्रयास	भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा 1966 में 'मानक देवनागरी' का प्रकाशन किया गया। केंद्रीय हिन्दी निदेशालय इस पर कार्य करता है।
प्रमुख सुधार	'अ' की बारहखड़ी को लेकर भ्रम दूर करना, शिरोरेखा का प्रयोग, वर्णों के संयुक्ताक्षर रूपों को मानकीकृत करना।

5: राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास

महत्वपूर्ण पड़ाव	वर्ष / तिथि	प्रावधान / घटना
संविधान सभा में स्वीकृति	14 सितम्बर, 1949	संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसीलिए 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।
संवैधानिक प्रावधान	26 जनवरी, 1950	संविधान के भाग 17 में, अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए।
अनुच्छेद 343(1)	(लागू)	"संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।"
प्रथम राजभाषा आयोग	1955	बी.जी. खेर की अध्यक्षता में प्रथम राजभाषा आयोग का गठन किया गया।
राजभाषा अधिनियम	1963	इसने 1965 के बाद भी अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने का प्रावधान किया।
प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन	1975	नागपुर (भारत) में आयोजित हुआ, जिसका उद्देश्य विश्व स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना था।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट हिंदी मॉडल प्रश्न पत्र (कठिन स्तर)

प्रश्न 1: रीतिकाल के किस कवि ने नायिका भेद के साथ-साथ ऋतु वर्णन और बारहमासा का विस्तृत और मनोवैज्ञानिक चित्रण अपने काव्य में किया है, जो उन्हें अन्य रीतिकालीन कवियों से विशिष्ट बनाता है?
(1) बिहारी
(2) केशवदास
(3) सेनापति
(4) पद्माकर

सही उत्तर: (3) सेनापति
व्याख्या:

- सेनापति रीतिकाल के उन कवियों में से हैं जिन्होंने प्रकृति चित्रण को विशेष महत्व दिया।
- उनके काव्य 'कवित्त रत्नाकर' में षड्ऋतु वर्णन अत्यंत प्रौढ़ और स्वाभाविक है।
- उन्होंने प्रकृति के आलंबन और उद्दीपन, दोनों रूपों का चित्रण किया है, जिसमें सूक्ष्म पर्यवेक्षण और मनोवैज्ञानिकता झलकती है।
- जबकि बिहारी मुख्यतः श्रृंगारिक दोहों, केशवदास अलंकारिकता और पद्माकर विविध रसों के लिए जाने जाते हैं, सेनापति का वैशिष्ट्य उनके विशद और सजीव प्रकृति चित्रण (विशेषकर ऋतु वर्णन) में है।

प्रश्न 2: 'अंधेर नगरी' नाटक में महंत जी द्वारा गोवर्धन दास को शहर छोड़कर चले जाने की सलाह देने का मूल कारण क्या था?
(1) शहर की अव्यवस्था और मूर्ख राजा
(2) गोवर्धन दास का लालची स्वभाव
(3) भविष्य में आने वाली विपत्ति का पूर्वाभास
(4) शहर के लोगों का दुष्ट चरित्र

सही उत्तर: (3) भविष्य में आने वाली विपत्ति का पूर्वाभास
व्याख्या:

- महंत जी एक अनुभवी और दूरदर्शी व्यक्ति हैं। वे शहर की शासन व्यवस्था ('अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा') देखकर समझ जाते हैं कि ऐसी जगह रहना उचित नहीं जहाँ भले-बुरे में कोई अंतर न किया जाता हो।
- उन्हें आभास हो जाता है कि इस अव्यवस्था के कारण कभी भी कोई निर्दोष संकट में पड़ सकता है, इसलिए वे गोवर्धन दास को वहाँ से चले जाने की सलाह देते हैं। उनका यह पूर्वाभास नाटक के अंत में सत्य सिद्ध होता है।

प्रश्न 3: रामचंद्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में किस कवि के संदर्भ में कहा है कि "इनकी भाषा चलती होने पर भी अनुप्रासयुक्त होती थी"?
(1) भारतेन्दु हरिश्चंद्र
(2) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
(3) प्रतापनारायण मिश्र
(4) बालकृष्ण भट्ट

सही उत्तर: (3) प्रतापनारायण मिश्र

PROFESSORS ADDA

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

व्याख्या:

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भारतेन्दु युगीन लेखकों की चर्चा करते हुए प्रतापनारायण मिश्र की भाषा शैली पर यह टिप्पणी की है।
- शुक्ल जी के अनुसार, मिश्र जी की भाषा सहज, बोलचाल के निकट और मुहावरेदार थी, लेकिन उसमें अनुप्रास आदि शब्दालंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से आ जाता था, जिससे भाषा में एक विशेष प्रवाह और आकर्षण उत्पन्न होता था।

प्रश्न 4: 'मैला आँचल' उपन्यास में चित्रित मेरीगंज गाँव के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में किस विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है?
(1) गाँधीवाद
(2) मार्क्सवाद
(3) समाजवाद
(4) अस्तित्ववाद

सही उत्तर: (3) समाजवाद

व्याख्या:

- 'मैला आँचल' उपन्यास स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद के ग्रामीण भारत का चित्र प्रस्तुत करता है।
- मेरीगंज गाँव में विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं (कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी) का संघर्ष और प्रभाव दिखाया गया है।
- डॉ. प्रशांत, बावनदास जैसे पात्रों के माध्यम से समाजवादी विचारधारा, विशेषकर जमीनी स्तर पर जनता के बीच कार्य करने, शोषण का विरोध करने और सामाजिक न्याय की स्थापना का प्रयास, प्रमुखता से उभरता है। यद्यपि गाँधीवाद का भी प्रभाव है, परन्तु संघर्ष और परिवर्तन की मुख्य धारा समाजवादी चिंतन से प्रेरित दिखती है।

प्रश्न 5: पाश्चात्य काव्यशास्त्र के 'निर्वैयक्तिकता' (Impersonality) सिद्धांत का प्रमुख प्रस्तोता कौन है, जिसने कवि के व्यक्तिगत भावों के स्थान पर कलात्मक अभिव्यक्ति को महत्व दिया?
(1) आई. ए. रिचर्ड्स
(2) क्रोचे
(3) टी. एस. इलियट
(4) कॉलरिज

सही उत्तर: (3) टी. एस. इलियट
व्याख्या:

- टी. एस. इलियट ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'Tradition and the Individual Talent' में 'निर्वैयक्तिकता' (Impersonality) के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
- इसके अनुसार, कविता कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उससे पलायन है। महान कलाकृति कवि के व्यक्तिगत संवेगों और अनुभवों से मुक्त होकर एक वस्तुनिष्ठ और सार्वभौमिक कला रूप ग्रहण करती है।
- कवि एक माध्यम मात्र है जो परंपरा और वर्तमान के बोध को कला में ढालता है, न कि अपने निजी भावों का प्रदर्शन करता है।

PROFESSORS ADDA

प्रश्न 6: 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास में किस पात्र के माध्यम से हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों और नारी जीवन की विडंबनाओं पर प्रहार किया है?
(1) भट्टिनी
(2) निपुणिका (निउनिया)
(3) महामाया भैरवी
(4) सुचरिता

सही उत्तर: (2) निपुणिका (निउनिया)
व्याख्या:
- निपुणिका, जिसे बाणभट्ट 'निउनिया' कहता है, एक निम्न वर्ग की, समाज द्वारा उपेक्षित और शोषित पात्र है।
- उसके जीवन संघर्ष, उसकी वाक्पटुता और उसकी व्यावहारिक बुद्धि के माध्यम से द्विवेदी जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, नारी शोषण और पाखंड पर गहरा व्यंग्य किया है।
- भट्टिनी और महामाया उच्च वर्गीय पात्र हैं, जबकि सुचरिता ज्ञान और पांडित्य का प्रतिनिधित्व करती है। निउनिया का चरित्र सामाजिक यथार्थ को अधिक तीव्रता से उजागर करता है।

प्रश्न 7: "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है।" - भाषा की यह परिभाषा किस विद्वान की है?
(1) भोलानाथ तिवारी
(2) कामता प्रसाद गुरु
(3) किशोरीदास वाजपेयी
(4) श्यामसुंदर दास

सही उत्तर: (2) कामता प्रसाद गुरु
व्याख्या:
- यह प्रसिद्ध परिभाषा कामता प्रसाद गुरु ने अपने व्याकरण ग्रंथ 'हिन्दी व्याकरण' में दी है।
- यह परिभाषा भाषा के मुख्य कार्य - विचारों के आदान-प्रदान - को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है और हिंदी व्याकरण के अध्ययन में मानक मानी जाती है।

प्रश्न 8: 'गोदान' उपन्यास में होरी द्वारा दातादीन से रुपये उधार लेने का तात्कालिक कारण क्या था?
(1) गाय खरीदने के लिए
(2) धनिया के लिए गहने बनवाने के लिए
(3) घर की मरम्मत के लिए
(4) झुनिया और उसके बच्चे को घर में रखने के कारण बिरादरी को भोज देने के लिए

सही उत्तर: (4) झुनिया और उसके बच्चे को घर में रखने के कारण बिरादरी को भोज देने के लिए
व्याख्या:
- जब भोला की विधवा बेटी झुनिया गोबर के बच्चे को लेकर होरी के घर आ जाती है, तो गाँव की पंचायत और बिरादरी होरी पर दंड लगाती है।

PROFESSORS ADDA

- इस दंड (भोज और नकद जुर्माना) को भरने के लिए होरी को मजबूरन महाजन दातादीन से भारी ब्याज पर रुपये उधार लेने पड़ते हैं, जो उसके जीवन की त्रासदी को और गहरा कर देता है। गाय खरीदने की इच्छा पहले से थी, लेकिन यह उधार तात्कालिक रूप से पंचायत के दंड के कारण लेना पड़ा।

प्रश्न 9: 'असाध्य वीणा' कविता में वीणा को साधने के लिए किस तत्व की आवश्यकता पर बल दिया गया है?
(1) कलात्मक कौशल और अभ्यास
(2) अहंकार का विसर्जन और आत्म-समर्पण
(3) राजा का आशीर्वाद और प्रोत्साहन
(4) मंत्रों और तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग

सही उत्तर: (2) अहंकार का विसर्जन और आत्म-समर्पण
व्याख्या:

- अज्ञेय की 'असाध्य वीणा' कविता में प्रियंवद के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि वीणा (जो परम सत्य या सृजनात्मकता का प्रतीक है) किसी कलात्मक अहंकार या कौशल से नहीं सधती।
- उसे साधने के लिए साधक को अपने 'अहं' को पूरी तरह गलाकर, प्रकृति और उस परम सत्ता के प्रति पूर्ण समर्पण करना होता है। प्रियंवद स्वयं को वीणा के स्रोत किरीटी-तरु और ब्रह्मांड के प्रति समर्पित कर देता है, तभी वीणा बज उठती है।

प्रश्न 10: फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता में भाषा मुंशी के रूप में कार्य करने वाले निम्नलिखित विद्वानों में से कौन खड़ी बोली गद्य के प्रारंभिक उन्नायकों में शामिल नहीं हैं?
(1) लल्लू लाल
(2) सदल मिश्र
(3) इंशा अल्ला खाँ
(4) सदासुख लाल 'नियाज'

सही उत्तर: (4) सदासुख लाल 'नियाज'
व्याख्या:

- लल्लू लाल ('प्रेमसागर') और सदल मिश्र ('नासिकेतोपाख्यान') फोर्ट विलियम कॉलेज से सीधे तौर पर जुड़े थे और जॉन गिलक्राइस्ट के निर्देशन में खड़ी बोली गद्य के विकास में योगदान दिया।
- इंशा अल्ला खाँ ('रानी केतकी की कहानी') कॉलेज से सीधे संबद्ध नहीं थे, पर वे भी खड़ी बोली गद्य के आरंभिक लेखक माने जाते हैं।
- सदासुख लाल 'नियाज' ('सुखसागर') दिल्ली के निवासी थे और उनका संबंध फोर्ट विलियम कॉलेज से नहीं था। उन्होंने स्वतंत्र रूप से खड़ी बोली गद्य में रचना की।

प्रश्न 11: 'राम की शक्तिपूजा' में राम द्वारा शक्ति की उपासना का निर्णय लेने से पूर्व किन दो पात्रों के बीच संवाद में निराशा और संघर्ष का द्वंद्व उभरता है?
(1) राम और लक्ष्मण
(2) राम और विभीषण
(3) राम और हनुमान
(4) राम और जाम्बवान

PROFESSORS ADDA

सही उत्तर: (4) राम और जाम्बवान
व्याख्या:

- रावण से युद्ध में लगातार हो रही क्षति और स्वयं की पराजय की आशंका से राम अत्यंत निराश और हताश हो जाते हैं।
- इस स्थिति में अनुभवी और ज्ञानी जाम्बवान उन्हें ढाढ़स बँधाते हैं और शक्ति (देवी दुर्गा) की उपासना करके विजय प्राप्त करने का सुझाव देते हैं। उनके संवाद में राम की गहन निराशा और जाम्बवान द्वारा जगाई गई आशा और कर्तव्य-बोध का द्वंद्व प्रकट होता है।

प्रश्न 12: अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव हिंदी के किस उपन्यासकार की कृतियों में विशेष रूप से लक्षित होता है, जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता, चयन की पीड़ा और संत्रास का चित्रण मिलता है?
(1) यशपाल
(2) भगवती चरण वर्मा
(3) अज्ञेय
(4) फणीश्वरनाथ रेणु

सही उत्तर: (3) अज्ञेय
व्याख्या:

- अज्ञेय के उपन्यासों, विशेषकर 'शेखर: एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' में अस्तित्ववादी दर्शन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।
- इनमें पात्रों के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता, अपने अस्तित्व को परिभाषित करने की छटपटाहट, चयन की पीड़ा, अकेलेपन का संत्रास और मृत्यु बोध जैसे अस्तित्ववादी विषयों का अन्वेषण किया गया है।

प्रश्न 13: "दुःख सबको माँजता है / और / चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु / जिनको माँजता है / उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।" - ये पंक्तियाँ अज्ञेय की किस कविता या काव्य-संग्रह से उद्धृत हैं?
(1) असाध्य वीणा
(2) साँप
(3) कितनी नावों में कितनी बार
(4) हरी घास पर क्षण भर

सही उत्तर: (4) हरी घास पर क्षण भर
व्याख्या:

- ये प्रसिद्ध पंक्तियाँ अज्ञेय के काव्य संग्रह 'हरी घास पर क्षण भर' (1949) की एक कविता से हैं।
- इन पंक्तियों में दुःख के परिष्कारक और व्यक्ति को संवेदनशील बनाने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है, जो उसे दूसरों के दुःख के प्रति अधिक करुण और मुक्ति कामी बनाता है।

प्रश्न 14: 'स्कंदगुप्त' नाटक में धातुसेन किस पात्र के षड्यंत्र का शिकार होकर मारा जाता है?
(1) भटार्क
(2) प्रपंचबुद्धि
(3) विजया

PROFESSORS ADDA

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (Commerce)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (Education)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (English Literature)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (Sociology)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (Psychology)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (Political Science)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (History)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

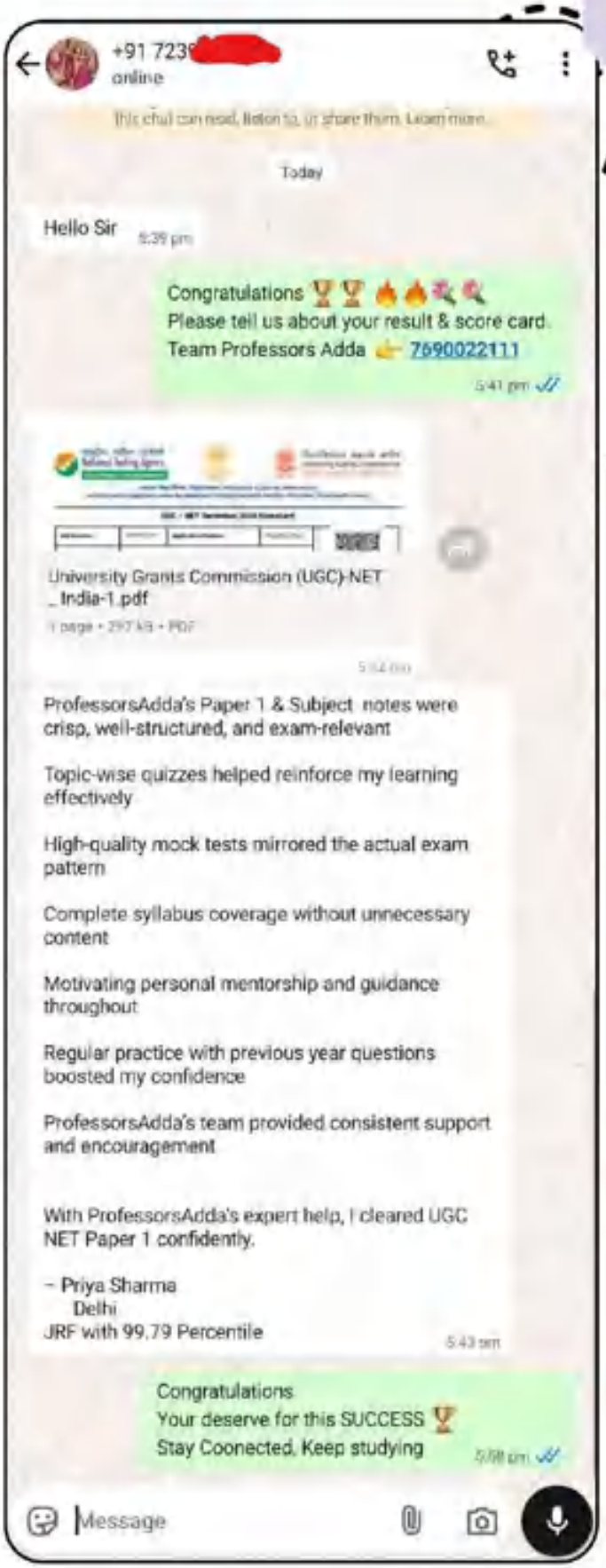

+91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Professors Adda UGC NET

87162 members, 2123 online

Pinned Message

Offer 💐 UGC –NET / JRF ASST PROFESSO...

2478 join requests

ProfessorsAdda NET JRF

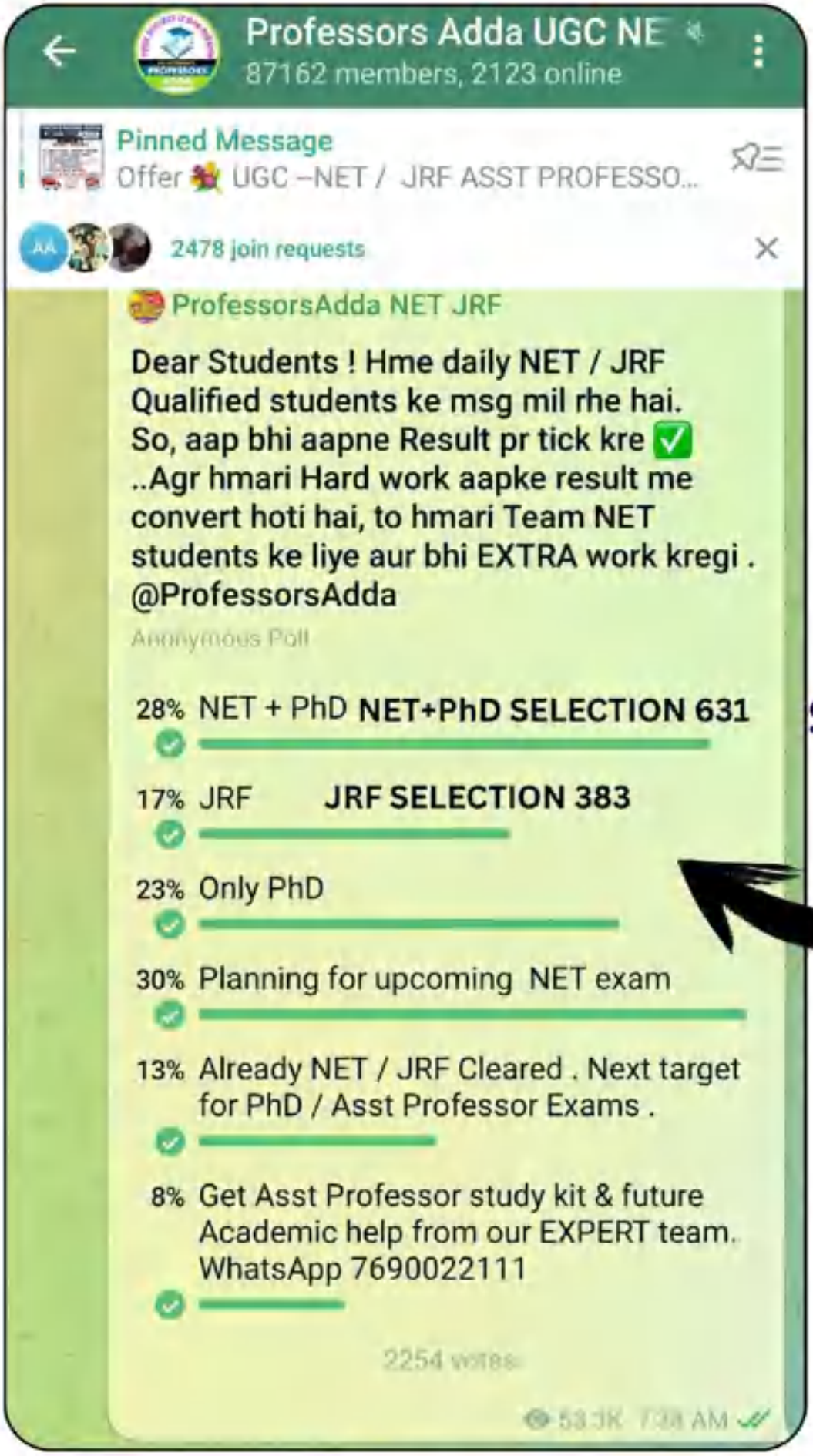

Dear Students ! Hme daily NET / JRF Qualified students ke msg mil rhe hai. So, aap bhi aapne Result pr tick kre ✅ ..Agr hmari Hard work aapke result me convert hoti hai, to hmari Team NET students ke liye aur bhi EXTRA work kregi . @ProfessorsAdda

Anonymous Poll

28% NET + PhD **NET+PhD SELECTION 631**

17% JRF **JRF SELECTION 383**

23% Only PhD

30% Planning for upcoming NET exam

13% Already NET / JRF Cleared . Next target for PhD / Asst Professor Exams .

8% Get Asst Professor study kit & future Academic help from our EXPERT team. WhatsApp 7690022111

2254 votes

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Exclusive English GROUP

INDIA'S NO 1 UGC NET GROUP

CLICK HERE TO JOIN

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

MANY MORE SELECTION

+91 7690022111+91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

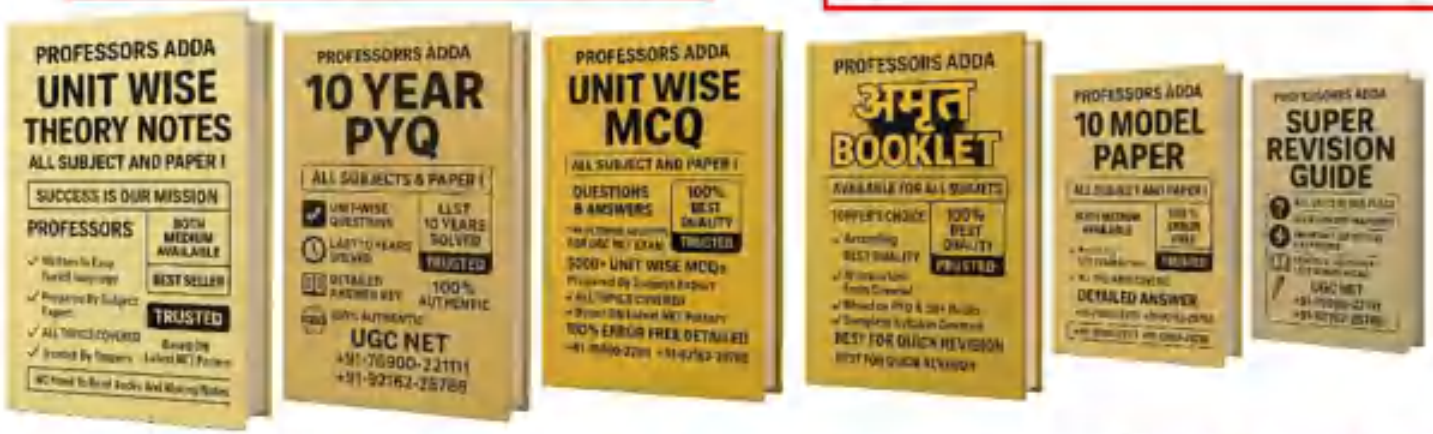

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY
COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

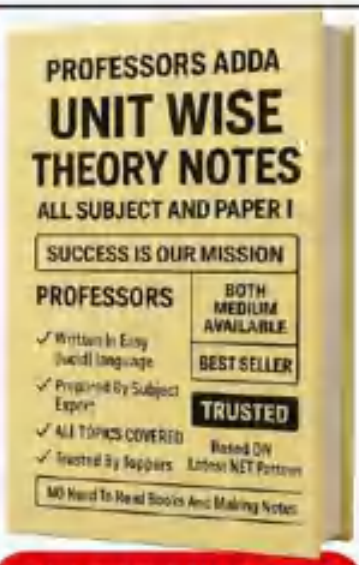

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

NEW PRODUCT

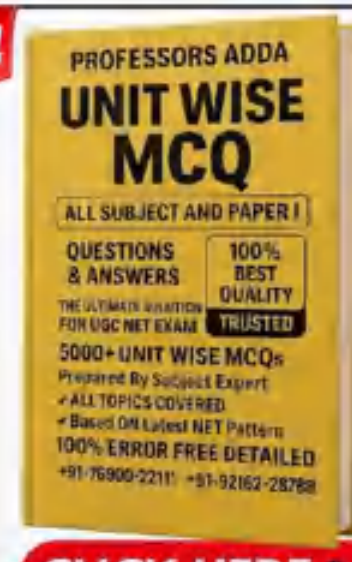

CLICK HERE

NEW PRODUCT

CLICK HERE

+91 7690022111+91 9216228788